फरवरी 2018

मूल्य : दस रूपए

माहेश्वरी महिला

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी संगठन का मासिक मुखपत्र

वर्ष : 18, अंक : 2

उत्कृष्ट शुभ नववर्ष हो

हास हो उल्लास हो, वेदना न पास हो
नित नये पुष्पों के सदृश, उमंगों का एहसास हो
नववर्ष में नव चेतना का, चारों तर आगाज़ हो

लड्ढा परिवार की ओर से आप सभी को नूतन वर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाएँ

श्रीमती आशा लड्ढा - सत्यनारायण लड्ढा

फरीदाबाद, मोबाइल : 9313770556

पत्रिका पंजीयन क्र./2001/6505 दिनांक 29/04/2002

पोस्ट पंजीयन क्र. 536

पोस्ट दिनांक 5 फरवरी 2018

प्रेषक :
माहेश्वरी महिला
माहेश्वरी सदन, जयेन्द्रगंज
ग्वालियर (म.प्र.)

प्रति,

माहेश्वरी महिला समिति की ओर से चन्द्रा स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग वर्क्स से मुद्रित, श्रीमती मनोरमा लड्ढा द्वारा ग्वालियर से प्रकाशित एवं संपादित

नववर्ष के नव सूर्योदय के साथ 'मैरीकॉम' ने दिया महिलाओं को नव उत्साह

बैठक की झलकियाँ

शिव परिवार आशीर्वाद देते हुए

वनबंधु मेला समिति की नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती गीता जी मुंदडा को सम्मानित करते हुए

माँ रत्नीदेवी जी के साथ प्रसन्न मुद्रा में सदस्य

माँ रत्नीदेवी जी के साथ प्रसन्न मुद्रा में सदस्य

बायोडाटा सम्मेलन

पदाधिकारी प्रसन्न मुद्रा में

दर्शक गैलेरी

सुषमा समिति की प्रभारी कमला मोहता द्वारा सरकारी योजनाओं की झाँकी

माहेश्वरी महिला

अखिल भारतीवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन का मुखपत्र

प्रकाशक
माहेश्वरी महिला समिति
263, जीवाजी नगर, थाटीपुर, ग्वालियर
फोन : 0751-2340068, मो.: 9329606094
फैक्स : 0751-2232402
ई-मेल : maheshwarimahilagwl@gmail.com

अध्यक्ष
श्रीमती मनोरमा लड्ढा

उपाध्यक्ष
श्रीमती विमला देवी साबू

सचिव
श्रीमती लता लाहोटी

कोषाध्यक्ष
श्रीमती अनीता माहेश्वरी

संयुक्त सचिव
श्रीमती शोभा सादानी

सदस्य
श्रीमती पद्मा देवी मूंदड़ा
श्रीमती गीता देवी मूंदड़ा
श्रीमती रतनी देवी काबरा
श्रीमती कल्पना गगरानी
डॉ. श्रीमती ताता माहेश्वरी
श्रीमती निर्मला जेठा

संपादक मंडल
संपादक
श्रीमती मनोरमा लड्ढा

श्रीमती सुशीला काबरा

श्रीमती रेखा माहेश्वरी

सम्पादकीय

मनोरमा लड्ढा
सम्पादक

''नव किसलय सा, नया वर्ष यह
पूरित हर्षित दिग–दिगन्ते हो,
फूले फले निरंतर जीवन,
तब समाज में चिर बसन्त हो।''

नववर्ष की सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। वर्ष 2018 में आप सभी सुखी रहें, समृद्ध रहें, स्वस्थ रहें, ऐसी कामना करती हूं। वर्ष आते हैं.....चले जाते हैं ,हमें कुछ सिखा जाते हैं। पूर्व इतिहास पर चितंन करें तो हम देखते हैं कि प्रत्येक वर्ष के कार्य अपने पीछे अनेक खट्टी मीठी यादों का अनुभव दे जाते हैं जिससे हम बेहतर जीवन की ओर आगे बढ़ सकते हैं बशर्ते कि हम अपनी कमियों को नजरअंदाज न करें और कमियों से सीख लेते हुए श्रेष्ठ जीवन की राह को स्वीकार करें। अंकों की दृष्टि से वर्ष 2018 का जोड़ 11 होता है और हमारे संगठन का भी यह 11वा सत्र है। अतः संगठन के इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि प्रारंभ से ही संगठन में सभी बहनों ने अपनी मेहनत लगन से सामाजिक समस्याओं पर चिंतन करके समस्याओं का निराकरण किया। प्रान्तीय पदाधिकारी एवं सदस्यगण अपनी क्षेत्रीय व स्थानीय सामाजिक समस्याओं को सदन में रखते हैं फिर आपसी सुझावों व विचार विमर्श द्वारा अनेक छोटी बड़ी समस्याओं का निराकरण करते हैं। इस तरह आत्मविश्वास के साथ समाज में मिलकर सभी बहनों ने काम किया एवं तत्कालीन अनेक कुरीतियों का उन्मूलन किया जिसमें पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या मृत्यु भोज आदि महत्वपूर्ण है।

कुरीति उन्मूलन के साथ ही नारी की प्रगति के लिए भी अनेक कार्य किए। नारी शिक्षा व नारी सशक्तिकरण का अलख जगाया जिसके परिणामस्वरूप आज हमारे समाज में नारी घूंघट से ऊपर उठकर हर क्षेत्र में अग्रणीय बनी। गांव हो या शहर कहीं भी नारियां पिछड़ी नहीं हैं बल्कि आत्मनिर्भर हो गयी हैं। यह महिला समाज की बहुत बड़ी उपलब्धि है। अभी कलकत्ता में आयोजित कार्यक्रम में बरेली गांव जैसे छोटे से स्थान की बहनों ने राष्ट्रीय मंच पर श्रेष्ठता हासिल की, लेकिन जैसा कि हम जानते हैं, मानते हैं व देखते हैं कि जीवन में धूप के साथ छाया है, सुख के साथ दुख है, विश्वास के साथ धोखा, उत्कर्ष के साथ अपकर्ष, मान के साथ अपमान आदि स्वतः ही अपना स्थान बना लेते हैं ऐसा ही कुछ महिला शिक्षा व स्वाबलंबन के साथ हो रहा है क्योंकि वर्तमान में शिक्षा सिर्फ डिग्री, नौकरी तथा धनार्जन तक ही सीमित होती जा रही है, शिक्षा पद्धति में संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। शिक्षा संस्कारों, पारिवारिक तथा व्यवहारिक ज्ञान से वंचित होती जा रही है।

अब ''शिक्षित नारी शिक्षित संस्कारी समाज'' निर्माण के स्थान पर नारी स्वविकास तक ही सीमित होती जा रही है। संस्कारों के साथ सामूहिक परिवार को निभाना उन्हें स्वीकार नहीं बच्चे उन्हें कैरियर में बाधक लगने लगे है परिणामस्वरूप समाज की संख्या निरंतर कम हो रही है। सामाजिक व पारिवारिक परिवेश में कन्याओं की प्रगति से समक्ष लड़के पिछड़ते से होने लगे हैं जो एक चिन्तनीय विषय हो सकता है क्योंकि पारिवारिक जीवन हो या सामाजिक जीवन उसमें संतुलन होना बहुत जरूरी है। पहले लड़कियों को उपेक्षित किया गया इसका परिणाम आज भुगत रहे हैं भविष्य में कदापि ऐसा न हो कि लड़के इतने उपेक्षित होते चले जाएं कि उसका दुष्परिणाम समाज को आगे भोगना पड़े। समाज में बड़ी उम्र के कुंवारे लड़के व अर्न्तजातीय विवाह करते लड़के व लड़कियां इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। समय रहते इस तरह की समस्याओं पर चिंतन करना और इसके निराकरण के रचनात्मक उपाय ढूढ़ना सामाजिक संगठनों का महत्वपूर्ण दायित्व है। सभी स्तर के सामाजिक संगठनों को अपने स्तर की सभी समस्याओं को लेकर उनपर चिंतन करना व सुधार के लिए कदम उठाना बहुत आवश्यक हो गया है। इन समस्याओं के निदान में मातृशक्ति अहम् भूमिका निभा सकती है क्योंकि माता ही बालक की प्रथम गुरू होती है वह जिन संस्कारों से संतान को सिंचित करेगी बालक का स्वरूप वैसा ही बनेगा अतः मातृशक्ति एवं महिला संगठनों का कार्य और भी अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। मेरा मानना है कि प्रगति की दौड़ में हम कितना भी ऊंचा क्यों न उठ जायें किन्तु जड़ों से जुड़े रहकर ही वृक्ष हरा भरा रहता है। ''चिड़िया कितना भी आकाश में ऊंचा उड़ लें लेकिन दाना चुगने के लिए जमीन पर आना ही पड़ता है।'' अर्थात परम्पराओं को निभाते हुए प्रगति पथ पर अग्रसर होना ही श्रेयस्कर होता है। समाज में एकरूपता लाने के लिए सामाजिक संगठनों का दायित्व है कि वह समाज के साधारण वर्ग को मुख्य धारा से जोड़ने का भरकस प्रयास करे, उन्हें अवसर प्रदान करे, उन्हें आगे बढ़ने के लिए साधन, सुविधा व आर्थिक संबल प्रदान करे क्योंकि 11 अंक हमें यह भी प्रेरणा देता है कि 1 अंक के साथ 1 जुड़कर रहेंगे तो समाज के सभी वर्ग (अमीर व गरीब) 1+1=11 की शक्ति बनी रहेगी अन्यथा हम खुद ही 1–1=0 होते जाएंगे। हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। अतः हमें ''सबका साथ सबका विकास'' के मूलमंत्र को अपनाकर समाज में सबका विकास करना होगा तभी समाज का उज्जवल भविष्य बना रहेगा और हम विश्व के उच्च कोटि के समाज के नाम से जाने जा सकेंगे।

इन्हीं भावनाओं के साथ पुनः नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।।

संपादक

मनोरमा लड्ढा

अपना आत्मबल बढ़ाएँ

सहनशीलता को सुदृढ़ करने के लिए आत्मबल जरूरी है। जो लोग आत्मबल के धनी होते है वे प्रारंभ से ही सहनशील होकर चलते हैं। सहनशीलता के पालन में उन्हें कोई कष्ट उठाना नहीं पड़ता, किन्तु कमजोर और असहाय व्यक्तियों के पास आत्मबल का अभाव होता है, इसलिये वे मन, वचन, कर्म से टूटे हुए या क्षीण मालूम होते हैं। आत्मबल बढ़ाने के कई तरीके होते हैं। सबसे बड़ा तरीका आध्यात्मिक योग साधना का है। इसके अलावा निम्नलिखित अन्य विधियों से भी आत्मबल बढ़ाया जा सकता है।

1. सकारात्मक चिंतन 2. साहस से 3. निर्भयता अपनाकर 4. शरीर को नश्वर एवं अपनी अंतरात्मा को अविनाशी चैतन्य शक्ति मानकर 5. श्रेष्ठ कर्मो द्वारा 6. यर्थाथ कर्तव्य बोध से 7.सही लक्ष्य का मार्ग चुनकर 8. ईमानदारी से 9. सत्यता पर चलकर 10. चारित्रिक उज्जवलता से।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

अध्यक्ष
श्रीमती कल्पना गगरानी
मुम्बई

महामंत्री
श्रीमती आशा माहेश्वरी
कोटा

अर्थमंत्री
श्रीमती कौशल्या गट्टानी
उदयपुर

संगठन मंत्री
श्रीमती मंजू बांगड़
कानपुर

निवर्त्तमान अध्यक्ष
श्रीमती सुशीला काबरा, इन्दौर

उपाध्यक्ष
श्रीमती सरला काबरा, गोवाहाटी
श्रीमती ममता मोदानी, भीलवाड़ा
श्रीमती ज्योति राठी, रायपुर
श्रीमती कान्ता गगरानी, आगरा
श्रीमती शैला कलंत्री, येवला

सहसचिव
श्रीमती मंजू कोठारी, कोलकाता
श्रीमती फूलकुंवर मूंदड़ा, जोधपुर
श्रीमती मंगल मर्दा, वापी
श्रीमती शर्मिला राठी, दिल्ली
श्रीमती प्रकाश मूंदड़ा, बैंगलौर

कार्यालयीन सचिव
श्रीमती सुषमा मूंदड़ा, ठाणे

संचालक मंडल

संरक्षिका
श्रीमती लता लाहोटी, पुणे

अध्यक्ष
श्रीमती आशा लड्ढा, फरीदाबाद

उपाध्यक्ष
श्रीमती पुष्पलता परतानी, अमरावती

सदस्य
श्रीमती राजकुमारी कोठारी, औरंगाबाद
श्रीमती विनीता लाहोटी, कोटा
श्रीमती वीणा राठी, ग्वालियर

अध्यक्षीय

पदभार ग्रहण किये एक वर्ष पूर्ण हुआ। दो कार्यसमिति बैठक संग एक कार्यकारिणी बैठक वृहद औद्योगिक मेला एवं महिला खेल महोत्सव का सफल एवं सारगर्भित आयोजन। सुदर्शन ब्रजमंडल यात्रा में इतनी अधिक भक्त बहनों का संपूर्ण भारतवर्ष से आगमन। दस दिन की कठिन यात्रा, बौद्धिक एंव सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ भक्ति, ज्ञान एवं समाज सेवा का त्रिवेणी संगम से माहेश्वरी समाज की सामान्य सदस्याओं का मिलन, प्रथम वर्ष को सार्थक बनाने में संपूर्ण है। मन इन सफल आयोजनों से प्रसन्न हैं। परंतु प्रसन्नता इससे अधिक उन मंडलीय कार्यों से अधिक प्राप्त हुई है जो हमारे आव्हान और हमारी योजनाओं के तहत हर दिन, हर अवसर विशेष पर हमारे संगठन की न्यूनतम ईकाई स्थान, क्षेत्र एवं जिलों द्वारा किये गये कार्यो से हुई सही समयोपयोगी मितव्ययी कार्य हुए। ''सम्यक सोच'' हमारे घोष वाक्य का प्रथम बिंदु रहा। यह सोच जन जन की सोच हो, समाज की सम्मिलित सोच ही बने इस हेतु सुलेखा समिति का अनवरत प्रयास रंग लाया। पंद्रह सौ से दो हजार बहनें एक विषय पर अपने विचार रखने लगी और ''मंथन के मोती'' सामाजिक सोच के रूप में दमकने लगे। ''मनन चिंतन'' सामाजिक बहनों का निरंतर अभ्यास बन गया। ''सुगंधा'' की सुगंध से गावं गांव महक रहा है। साड़ी बैंक, चादर बैंक, टॉय बैंक, कम्प्यूटर बैंक योजनाओं के तहत एवं अन्य अनेकों दान प्रणाली द्वारा बहनों ने अपने गोद लिये गांवों की ओर कदम बड़ा दिये हैं। सेवा भाव सर्वोपरि बन गया है। माला के मोतियों को जोड़ती हुई ''संचारिका'' तकनीक का सही उपयोग करती हुई हर माहेश्वरी बहन के घर पहुंची। नदी बह निकली'' सुश्रीता बहनों को स्वाबलंबी, स्वाभिमानी एवं स्वयंसिद्धा बनाने में अपने अनेकों कार्यक्रमों, कार्यशालाओं के साथ आगे बड़ रही है। ''संवरणा'' घर बैठे व्हाट्सप के माध्यम से विवाह संबंध जोड़ने का जो कठिन कार्य कर रही है और हर दिन उसके आंकड़े जो दिखा रहे हैं, उससे आपकी पीठ ठोकने का मोह संवरण हो रहा है। ''सौष्ठा'' स्वास्थ्य की अलख जगा स्वास्थ्य कैंप एवं प्रतिदिन की देखरेख, रोकथाम एवं जागरूता का प्रचार कर रही है। ''सुरम्या'' के तहत स्थानीय एंव जिला स्तर पर अनेकों कार्य हो रहे हैं। ब्रजमंडल यात्रा के बाद अब बहनें किसी अन्य यात्रा का तकाजा कर रही है। पुस्तक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। ''सुकीर्ति'' का परचम स्थानीय स्तर पर तो हर दो तीन माह में लहराता ही है परंतु लोकनृत्य प्रतियोगिता, कव्वाली प्रतियोगिता के मंच पर बहनों का प्रदर्शन उनकी सुकीर्ति की सुदंर मिसाल बनी। ''सुषमा'' की छंटा नदी सफाई, वृक्ष लगाओ के माध्यम से ऐसी दिखी कि बरसात में डेढ़ लाख से अधिक झाड़ लगे एवं एक लाख सेंपलिंग का वितरण किया गया। सुरभि की ''सुरभि वक्त वक्त महकी'' रीतिरिवाज पंरपरा की कार्यक्रमों की कड़ियां तो जुड़ ही रहीं थी। सत्तु डेकोरेशन, राखी निर्माण की पुस्तक भी प्रकाशित हो गई। सुचिता के माध्यम से भक्ति के कार्यक्रमों को नई दिशा प्राप्त हो रही है। एक वर्ष की उपलब्धियों से सुदृढ़ कार्य तो दिख रहे हैं किंतु सुदूर दृष्टि में और दूर जाने को लालायित है। सृष्टि सजाने के लिए बहुत काम करना है। बहनों का यह उत्साह पूरा भरोसा दिला रहा है। इस भरोसे के सहारे आपके भरोसे पर खरे उतरे, ईश्वर इतनी शक्ति देवे। तथास्तु !

अध्यक्ष

कल्पना गगरानी

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के एकादश सत्र की प्रथम कार्यकारिणी बैठक, औद्योगिक मेला एवं खेलकूद महोत्सव ''उर्जिता 2017'' सम्पन्न

औद्योगिक मेला एवं खेलकूद महोत्सव उर्जिता 2017 का आयोजन दिनांक 15 से 20 दिसम्बर 2017 तक 47, Canal Road by pass between mani square mall apollo कोलकाता एवं space club में सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम पूर्वांचल में वृहत्तर कोलकाता माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा निर्मला मल्ल व अन्य सदस्यों एवं सुश्रिता समिति, सुकीर्ति समिति, सुषमा समिति, सुरभि समिति, संवरणा समिति के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ 15 दिसम्बर को प्रातः 10 बजे मंच पूजन एवं यज्ञ के माध्यम से डॉ. सरला बिरला प्रांगण में सम्पन्न हुआ। प्रदेश कलाकारों ने स्वागत सुरभि की सांस्कृतिक प्रस्तुति दी जिसमें विघ्नहर्ता गणेश जी को ध्याते हुए पारम्परिक व आधुनिक तरीके से अतिथि स्वागत की मनमोहक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। कोलकता प्रदेश अध्यक्षा श्रीमती निर्मला जी मल्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में राष्ट्रीय पदाधिकारियों का तथा अखिल भारत से पधारी बहनों का स्वागत किया। मंच पर विराजमान उद्‌घाटनकर्ता श्रीमती शान्ता जी सारडा, कार्यक्रम अध्यक्ष श्रीमती कल्पना जी गगरानी स्वागताध्यक्ष श्रीमती शोभा जी सादानी, मुख्य अतिथि राज्य मंत्री पं. बंगाल सरकार माननीय साधना जी पाण्डे, सम्मानीय अतिथि श्रीमती सूरज देवी लड्‌ढा, श्रीमती आशा जी माहेश्वरी, श्रीमती इन्द्रा गांधी , श्रीमती कौशल्या गट्टानी, श्रीमती मंजू बांगड़, श्रीमती सुशीला काबरा, श्री नन्दकिशोर जी लाखोटिया, श्रीमती सरला काबरा, श्रीमती मंजू कोठारी, श्री पंकज राठी, श्री भवंरलाल राठी, श्री मनीष मोहता, श्री अशोक गोयंका तथा देवी प्रसाद जी मूंदड़ा को पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह द्वारा कोलकाता प्रदेश पदाधिकारियों ने सम्मानित किया। तत्पश्चात श्री साधना पाण्डे, कल्पना जी गगरानी, आशा जी माहेश्वरी, सुशीला जी काबरा, श्री नन्दकिशोर जी लाखोटिया एवं शोभा जी सादानी ने अपने विचार वक्तव्य के रूप में रखे। संचालन प्रदेश मंत्री कोलकाता सीमा भट्टड़ द्वारा किया गया। औद्योगिक मेले में 135 स्टॉल लगाए गए जिसमें साड़ी, बेडशीट, आभूषण, गिफ्ट आइटम, घरेलू उपयोगी चीजें, स्टेशनरी, चप्पल, पर्स बैग, ठाकुर जी की पोशाक, चॉकलेट, दुपट्टा, मंगल पाट हेतु ड्रेस आदि मुख्य आकर्षण रहे। औद्योगिक समिति संयोजक गिरिजा सारडा, वर्षा मूंदड़ा, शोभा लाखोटिया, पुष्पा मूंदड़ा व उषा झंवर ने अपना कार्य बखूबी निभाया।

16 दिसम्बर 2017 – को ट्रस्ट की बैठक अध्यक्ष श्रीमती रत्नी देवी काबरा एवं मार्गदर्शक श्रीमती गीता जी मूंदडा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सायं 6 बजे राष्ट्रीय युवती खेल महोत्सव तथा उर्जिता 2017 उद्‌घाटन समारोह का भव्य प्रारंम्भ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ वन्दनम देवी वन्दना द्वारा प्रदेश कलाकारों की प्रस्तुति से प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पद्मभूषण विश्व विजेता मुक्केबाज मैरी कॉम का अद्‌भुत एव भव्य स्वागत कर उनको मंच पर बिठाया गया। दीप प्रज्वलन प्रसिद्ध उद्योगपति हेमन्त जी बांगड ने किया। प्रमुख अतिथि श्री सव्यसाची दत्त बी.एम.सी. थे तथा सम्मानीय अतिथि रामेश्वरलाल जी काबरा, श्री देवकिशन जी मूंदडा, श्री कमल जी गांधी, श्री अशोक जी गोंयनका, श्रीमती कल्पना गगरानी, श्रीमती शोभा सादानी, श्री मनोज श्री कुमार जी तोषनीवाल, श्री किशन जी मल्ल ने मंच पर आसन ग्रहण किया। महेश पूजन उपरान्त अतिथिगण का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह द्वारा किया गया। पांचों अंचल के खिलाड़ियों द्वारा मार्च पास्ट की प्रस्तुति विभिन्न वेशभूषा एवं संदेशों में

की गई। मशाल धारक निशा मोहता एवं सुनीति दम्मानी ने मशाल को दौड़ कर लाने हेतु मेरी कॉम के हाथों में पकड़ायी और मेरी कॉम ने मशाल को नियत स्थान पर स्थापित कर खेल महोत्सव को विधिवत उद्‌घाटन की उदघोषणा की। निर्देशन सुकीर्ति राष्ट्रीय प्रभारी सोनाली मूंदड़ा द्वारा तथा संचालन मोनालिसा भिमानी द्वारा किया गया। अतिथि स्वागत मंच संचालन प्रदेश संगठन मंत्री रेखा भिमानी एवं प्रदेश सह मंत्री रश्मि बिन्नानी द्वारा किया गया। राष्ट्रीय गान उपरान्त मार्च पास्ट आरंभ हुआ। समस्त मंचस्थ अतिथिगण ने खड़े होकर सैल्यूट किया तथा दोनों टीमों का स्वागत किया। मेरीकॉम ने अपने भाषण में विपत्तियों से जूझने की शक्ति तथा शारीरिक सतर्कता, पारिवारिक स्नेह एवं तालमेल तथा लक्ष्य पर केन्द्रित होने की बात कही।

अ.भा. महिला सेवा ट्रस्ट की रिपोर्ट

ट्रस्ट अध्यक्ष सौ. रत्नी देवी काबरा ने बताया कि पिछले एक दशक में 632 बहनों व बालिकाओं को करीब 65 लाख रूपये का सहयोग दिया गया है। आपने नई टीम का परिचय सदन से कराया। मंत्री ललिता मालपानी ने संचालन करते हुए ट्रस्ट की प्रगति की जानकारी दी। 31 मार्च 2017 को समाप्त वित्तीय वर्ष में ट्रस्ट का कॉरपस फंड 1,33,91,178 रूपये हो गया है तथा इस वर्ष 14,17,925 रू का डोनेशन दिया गया है। आपने ऑडिट रिपोर्ट का वाचन किया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। उपाध्यक्ष सौ.राज झंवर ने हरिद्वार मीटिंग की कार्यवाही पढ़ी। संस्थापक उपाध्यक्ष सौ.गीता मूंन्दडा ने कहा कि बैंक की ब्याज दर कम होने से कॉरपस फण्ड बढ़ाना आवश्यक हो गया है, तत्काल लगभग 15 लाख रूपये के आश्वासन प्राप्त हुए तथा सदस्य श्रेणी में परिवर्तन का प्रस्ताव रखा, जिसे स्वीकृत किया गया। 1 अप्रैल 2018 से सहायक, संरक्षक व विशिष्ट सदस्यों को क्रमशः 51000, एक लाख, व दो लाख रूपये देने होंगे। 31 मार्च 2018 तक पुरानी व्यवस्था लागू रहे। संयुक्त मंत्री सौ. मंगला मानधाना ने आभार व्यक्त किया।

सम्बोधन 2017 प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक दिनांक 16 से 18 दिसम्बर तक प्रतिदिन प्रातः 10 से 2 बजे तक राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना जी गगरानी की अध्यक्षता में रखी गयी। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री आशा माहेश्वरी द्वारा किया गया। प्रथम दिवस ट्रेनों और फ्लाइट के लेट होने से एजेण्डा के

विषय में फेरबदल हुआ। बैठक के शुभारंभ में भगवान महेश की पूजा अर्चना, वंदना की गयी। आयोजक संस्था अध्यक्ष निर्मला जी मल्ल का शाब्दिक उद्‌बोधन उसके बाद दिवंगतों का दो मिनट मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कल्पना जी गगरानी ने उज्जैन एवं

भोपाल बैठकों की चर्चा की जिसमें संगठन की कार्ययोजना लक्ष्य पूर्ति हेतु समितियां बनाई गयी थी। इन समितियों के अन्तर्गत प्रदेशों के कार्यक्रमों की सराहना की गयी। उन्होंने कहा कि जो प्रदेश धीमी गति से चल रहे हैं वो गति पकड़ें। अगर हमें लगा कि अध्यक्ष, मंत्री कार्य नहीं कर रहे हैं और बैठकों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराते हैं तो उन्हें हटाया जा सकेगा। पश्चिमी उत्तरप्रदेश की समस्या को लेकर वहां तदर्थ कमेटी बनायी गयी थी उसे हटा दिया गया तथा उनका अधिकार वर्तमान अध्यक्ष व मंत्री को दिया गया। प्रदेश अध्यक्ष मंत्री द्वारा 2.50 मिनट में रिपोर्ट वाचन प्रतियोगिता सम्पन्न करवाई गयी। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशीला जी काबरा, गीता जी मूंदडा निर्णायक थीं। प्रथम स्थान दक्षिणी राजस्थान उदयपुर, द्वितीय स्थान विदर्भ और दिल्ली तथा तृतीय स्थान गुजरात और महाराष्ट्र प्रदेश था। लंच के बाद अखिल भारतवर्षीय महिला सेवा ट्रस्ट की बैठक अध्यक्ष रत्नी देवी काबरा की अध्यक्षता में श्रीमती गीता मून्दडा के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई।

सम्बर्धन 2017 – सशक्त नारी, सुदृढ़ समाज, सामाजिक बंधन सही परिवर्तन, पर हुई परिचर्चा के अन्तर्गत आधुनिक परिपेक्ष्य में कुछ विचार बिंदु प्रस्तुत किये गये। इस परिसंवाद की प्रतिभागी थीं माहेश्वरी समाज की कुछ प्रबुद्ध महिलाएं कोलकत्ता से श्रीमती शांता जी सारडा राष्ट्रीय उपाध्यक्षा वनबंधू परिषद, जोधपुर से डॉ. श्रीमती रजनी जी लाखोटिया सर्जन तथा प्रेरक वक्ता, इंदौर से श्रीमती वंदना जी लड्ढा निदेशक वित तथा ड्राइवर संचालन, शिवानी कैरियर्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदाराबाद से डॉ. श्रीमती अनुराधा जाजू आई टी सोल्यूशन प्रोवाइडर तथा मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता। दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी महाविद्यालय से अंग्रेजी की एसोसिऐट प्रोफेसर डॉ. उर्वशी साबू ने परिसंवाद का संचालन किया। आज यदि माहेश्वरी समाज को किसी चीज की अत्यधिक आवश्यकता है तो वो है बदलते परिपेक्ष्य से उन्मुख होकर स्वयं को बदलने की। इस महत्वपूर्ण कार्य में महिलाओं की अहम भूमिका को पहचानते हुए संगठन ने इस परिचर्चा का आयोजन किया। महिलाएं यदि सशक्त, समझदार और प्रगतिशील है तो समाज निश्चित ही विकासोन्मुख होगा, इस तथ्य को लक्षित करते हुए परिचर्चा में निम्न मुद्दों पर विचार–विमर्श हुआ।

1.सशक्तिकरण के मायने :– सभी प्रतिभागियों ने अपने दृष्टिकोण से सशक्तिकरण को परिभाषित किया। वंदना जी ने निर्णय लेने की क्षमता व स्वतंत्रता को सशक्तिकरण माना। अनुराधा जी का कहना था स्वतंत्रता, स्वछंदता या उच्छृखंलता न बने। रजनी जी ने पुरातन

की ओर ध्यान इंगित करते हुए बताया कि स्त्री तो शक्ति का ही रूप है। शांता जी ने भी इसी पांरपरिक मत का समर्थन करते हुए अपनी बात कही।

2.आधुनिक परिपेक्ष्य में बच्चों की परवरिश :– लगभग सभी प्रतिभागियों का मत था कि माता–पिता स्वयं उदाहरण बनेगें तो बच्चे अच्छी बातें अवश्य ग्रहण करेंगे। लड़के–लड़कियों की परवरिश में अंतर को जहॉ कुछ प्राकृतिक कारणों से सही भी माना वहीं बदलते घर–बाहर के मापदंडों को ध्यान में रखते हुए यह मत सामने आया कि हम लड़कियों को बदलते माहौल के अनुसार ढालने की कोशिश तो कर रहें हैं किंतु लड़कों को नहीं। आवश्यकता है तो लड़कों को भी अधिक संवेदनशील बनाने की। गृहकार्य के मूलमंत्र समझने की तथा हर स्त्री को स्वयं से कम नहीं अपितु बराबर समझने की। केवल पढ़–लिखकर ऊँची डिग्री हासिल करना ही नहीं, समझदारी व घर–बाहर दोनों के प्रति कर्तव्य परायणता भी आवश्यक है। समानता ही नहीं, सामंजस्य पर जोर देना होगा।

3.शिष्टाचार का अभाव, अंधानुकरण आदि की प्रवृति पर विचार हुआ। प्रतिभागियों ने पुनः माता पिता की अहम भूमिका पर जोर डालते हुए, घर के बड़ों के साथ समय बिताने, आपसी बातचीत के लिए खुला मंच रखने तथा बच्चों का वर्तमान सांसारिक परिवेश समझने का समर्थन किया। निर्णायक प्रवृति की अपेक्षा समन्वयात्मक प्रवृति अपनाएं, यह मत रखा गया।

4.पारिवारिक संबंध पति–पत्नी/ अन्य घरवालों के बीच :– इस विषय पर सभी ने अपने निजी जीवन से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपनी बात रखी। बड़े व बच्चे दोनों ही कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले घर में चर्चा करके अनुमति लें तो दोनों के आपसी संबंध सौहार्दपूर्ण होंगे। कामकाजी पति–पत्नी गृहकार्य में भी एक दूसरे का हाथ बटाएं तो दाम्पत्य मधुरता बढ़ेगी।

5. 50 के बाद अकेलापन व स्वास्थ्य :– इस विषय पर डॉ. रजनी जी ने अपने विचार रखे। उनका कहना था कि उम्र के साथ बदलते शरीर के प्रति सजग रहें तथा सार्थक सोच अपनाएं। घर–परिवार का दैनिक संचालन अपने बच्चों को सौंपते हुए सकारात्मक रवैया रखे। 50 के बाद का समय घर–परिवार के बाहर निकल कर अपने दायरे बढ़ाने का समय है। जिस समाज से आपने 50 वर्ष तक इतना कुछ सीखा, अब समय है उनकी सेवा व कल्याण का। निष्कर्ष में संचालिका डॉ. उर्वशी साबू ने परिचर्चा समेटते हुए कहा कि पारंपारिकता को न त्यागते हुए नवीनता को

अपनाएं। सामाजिक विघटन का कारण महिला सशक्तिकरण नहीं, अपितु बदलते परिवेश में स्वयं को ढालने की असमर्थता है। लेबनॉन के दार्शनिक कवि खलील जिबरान को उद्धरित करते हुए डॉ. साबू ने कहा कि बच्चे माता–पिता के धनुष रूपी शरीर से निकले वे तीर हैं जिन्हें माता–पिता दिशा देते हैं। किंतु तीर की नियति सदैव आगे को जाना ही है। वह कभी पलट कर वापस नहीं आता। अतः उन्हें सही दिशा देंगे तो उन्हें आगे जाता देख आपको अपार प्रसन्नता भी होगी और संतुष्टि भी। अंत में सभा से आए कई कठिन व समसामायिक प्रश्नों का प्रतिभागियों ने उचित उत्तर दिया। समिति प्रमुख श्रीमती शोभाजी सादानी व राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती कल्पना जी गगरानी ने अपने विचार रखते हुए सभा तथा प्रतिभागियों को धन्यवाद प्रेषित किया।

दो दिवसीय रंगोली कार्यशाला 16–17 दिसम्बर 2017 को **''संग रंगोली रंगे सहेली''** प्रशिक्षक श्रीमती माधुरी सुधा अमरावती जीनियस वर्ल्ड रिकॉर्ड का उद्घाटन श्री शरद गगरानी मुंबई, श्री कमल जी गांधी, श्री भगवान जी सादानी, श्री विट्ठल जी कोठारी ने किया। कार्यक्रम संयोजिका राजकुमारी दम्मानी एवं वर्षा भिमानी ने बताया कि अन्य प्रकार की रंगोली सीखने का मौका मिला जिसमें संस्कार भारती, ब्रासो, सीनरी, ग्रीटिंग कार्ड, पानी पर रंगोली, मोर, चेहरा, रंगोली की शॉर्ट ट्रिक, गणेश जी की अलग अलग तरह की रंगोली शामिल थीं। माधुरी सुधा को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया। संचालन वर्षा भिमानी नवयुक्ति प्रतिभा मंडल मंत्री द्वारा किया गया।

मिटेक्स पो का आयोजन दिसंबर 16 से 18 को कोलकाता में मिटेक्स पो का आयोजन किया गया। इंडिया हाट के रूप में एक नई अवधारणा का जन्म, जिसमें प्रादेशिक संगठनों को स्वावलंबन की ओर अग्रसर हो महिलाओं के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करने

का मौका मिला। इंडिया हाट में 19 प्रदेश स्टॉल लगाकर शामिल हुए। जिनका उद्देश्य था अपने प्रदेशों की विशेषता लिए हुए उत्पादों को स्टॉल के माध्यम से बेच कर प्रादेशिक कार्यक्रमों के लिए फण्ड रेजिंग करना, महिलाओं को अपने प्रदेश की विशेषताओं से युक्त उत्पादों की जानकारी देना तथा उन उत्पादों को बेचते हुए सेलिंग टेक्निक्स की ट्रेनिंग देना। कमर्शियल स्टॉल एक शतक का आंकड़ा पार करते हुए 133 स्टाल लगाये गये। जिनमें विभिन्न प्रकार के स्टॉल थे, जिनमें मुख्यतः साड़ी, सलवार सूट, ज्वैलरी, बेडशीट, खाटा सुपारी, बटन, घर सजाने के आइटम इत्यादि के स्टॉल थे। एक्सपो में सुश्रीता समिति का एक मुख्य उद्देश्य था कि महिलाओं को विभिन्न प्रकार के प्रोफेशन की जानकारी देना। इस उद्देश्य को मद्दे नजर रखते हुए हमारे समाज की युवा वैदिक चार्ट रीडर श्रीमती रोमा पेड़ीवाल को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने खुद एक स्टॉल खरीदकर हमारे मेले में भाग लिया। सुश्रीता समिति की प्रेरणा से सुश्री महक माहेश्वरी ने देसी बाईट्स नाम अपनी प्रोडक्ट लांच हमारे मेले में स्टॉल लेकर की। मेले में जरूरतमंद महिलाओं को स्वावलंबन की ओर प्रेरित करते हुए बिना विभेद किये रियायती मूल्यों पर एवं फ्री स्टॉल उपलब्ध कराए गए। दिसम्बर 17 को फैशन शो का आयोजन करते हुए समिति की ओर से सुश्री राधिका सादानी और श्रीमती गिरिजा सारड़ा के उद्घोषणा में समाज की फैशन और ज्वैलरी डिजाइनर बहनों को अपने डिजाइन प्रदर्शित करने का मौका दिया और उनकी एडवरटाइजिंग एल ई डी स्क्रीन्स के माध्यम से की गई। दिसम्बर 19 को टेड एक्स स्पीकर श्रीमती समीरा गुप्ता द्वारा लीडरशिप बिल्डिंग वर्कशॉप का सफलतम आयोजन हुआ जिसमें कार्यकारिणी के करीब 150 सदस्यों ने न सिर्फ भाग लिया, बल्कि अपने अपने प्रदेशों में यह वर्कशॉप करवाने के प्रति कटिबद्धता जताई।

उत्कृष्टा रैंप शो की संयोजिका रेखा गट्टानी, शशि डागा एवं कंचन राठी, अपने ही घर परिवार की बेटी बहुएँ जो व्यवसाय करती है उन्होंने अपनी ब्रान्ड के अंतर्गत परिधानों एवं आभूषणों का भव्य एवं सौम्य प्रदर्शन किया। प्रधान अतिथि श्रीमती सविता राठी एवं विशिष्ट अतिथि कल्पना जी गगरानी राष्ट्रीय अध्यक्ष, गीता जी मूंदड़ा राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष तथा ममता मोदानी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने मंच सुशोभित किया।

राष्ट्रीय लोक नृत्य प्रतियोगिता भरतनाट्यम का सुरभि समिति की प्रस्तुति का संचालन निशा लड्ढा प्रदेश सहमंत्री राष्ट्रीय प्रभारी सुरम्या द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि रानी हजारिका तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती कुसुम मूंदड़ा कोलकाता, आशा रांदड दिल्ली, सुषमा मूंदड़ा मुम्बई थीं। सुरभि समिति

प्रभारी ने कार्यक्रम की नियमावली बताई। प्रतियोगिता में क्रमशः प्रथम स्थान पर कोलकाता, द्वितीय स्थान पर मुम्बई, तृतीय स्थान पर जयपुर, चतुर्थ स्थान पर आसाम, पंचम स्थान पर उत्तरप्रदेश रहा। निर्णायकगण का निर्णय सर्वमान्य रहा। सभी को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं नकद राशि प्रदान की गई।

स्वाद सागर प्रतियोगिता 18 दिसम्बर प्रातः 11

बजे से कॉकरी शो द्वारा ''स्वाद सागर'' की व्यंजन प्रतियोगिता कोलकाता प्रदेश द्वारा शुभारम्भ की गई। श्रीमती शोभा जी इन्दानी प्रख्यात कुकिंग क्वीन प्रतियोगिता की निर्णायक थी। उसके बाद सुशीला जी राठी पूना, सचिव विद्या प्रचारक मंडल के सहयोग से अति उत्तम क्रॉकरी वर्कशॉप अन्नामृत लिया। विशिष्ट अतिथि कृष्णा मूंदडा, सुमित्रा काबरा, सरोज दुजारी तथा कुसुम भंडारी को सम्मानित किया गया। संचालन कोलकता प्रदेश सचिव सीमा भट्टड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम संयोजक नीति सोढानी व नेहा मूंदडा ने बताया कि प्रतियोगिता में 25 महिलाएं एवं 3 बच्चों ने भाग लिया। विजेता नेहा मूंदडा, अनन्ता राठी, अदिति तापड़िया, ज्योति तापड़िया, नैना मंत्री, माधुरी बाहेती रहीं। प्रोफेशनल विजेता संध्या तैनानी, श्वेता दम्मानी तथा तीन बच्चे क्रमशः प्रियम राठी, प्रीशा मूदंडा तथा प्रजना मूंदडा को भी पुरूस्कृत किया गया।

राष्ट्रीय कव्वाली गायन प्रतियोगिता 'नरोत्तमा' 18 दिसम्बर की सायं 4 बजे राष्ट्रीय कव्वाली प्रतियोगिता नरोत्तमा सुषमा समिति की प्रस्तुति रही उसमें श्रीमती कमला जी मोहता के अनुसार करीब 17 प्रदेशों ने भाग लिया जिसका विषय नारी सशक्तिकरण था। इस प्रतियोगिता की प्रधान अतिथि हिंगनघाट से श्रीमती लता जी मोहता, सम्मानीय अतिथि श्री मनमोहन जी मल्ल, श्री इन्द्र कुमार जी डागा, श्रीमती शर्मिला राठी श्रीमती फूलकुंवर मूंदडा, श्रीमती राज झंवर तथा श्री संजय जी लड्ढा का पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान किया गया। संचालन राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती वर्षा डागा द्वारा किया गया तथा विशेष

उपस्थिति श्री राजू दास भजन गायक मुम्बई, श्रीमती मारूति मोहता गायिका कोलकता की रही। विजेता क्रमशः प्रथम कोलकता प्रदेश, द्वितीय पूर्वी मध्यप्रदेश, तृतीय पूर्वोत्तर राजस्थान, चतुर्थ पूर्वी उत्तरप्रदेश, पंचम मध्य उत्तरप्रदेश, षष्ठम मध्य उत्तरप्रदेश, सप्तम छत्तीसगढ़ प्रदेश, अष्टम मुम्बई प्रदेश रहा। सभी को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं नकद राशि प्रदान की गई। तत्पश्चात कोलकता प्रदेश के समस्त आंचलिक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम **''समय संगम''** का अभूतपूर्व मंचन हुआ जिसके निर्देशक रैंकी मूंदडा व वर्षा डागा थे।

स्पेस सर्कल अभिनव कार्यशाला 19 दिसम्बर को प्रातः 10 बजे स्पेस सर्कल क्लब में डॉ. समीरा गुप्ता द्वारा ऑरा इमेज कन्सलटेन्सी आई.सी.बी.सी. पर्सनालिटी डेवलममेंट पर एक लाभदायक वर्कशॉप लिया गया जिसका संचालन राष्ट्रीय प्रभारी गिरिजा सारडा द्वारा किया गया।

फाइनल ऑफ गेम्स – 19 दिसम्बर को स्पेस सर्कल में समस्त खेलों के अंतिम रांउड संपादित हुए। खेल प्रतियोगिता 18–40 बर्ष महिला हेतु चेस, बैडमिन्टन, बॉस्केट बॉल, कैरम एवं क्रिकेट खेलों की प्रतियोगिता हुई। हर अंचल से दो खेल मैंनेजर नियुक्त किए गए थे।

प्रतियोगिताओं के विजेता –

चेस – डौली राठी मध्यांचल विनर, वैष्णवी तोषनीवाल दक्षिणांचल रनरअप।

कैरम – अंकिता माहेश्वरी मध्यांचल विनर, ज्योति मल्ल दक्षिणांचल रनरअप।

बैडमिंटन – राधिका नाविंदर दक्षिणांचल विनर, श्रद्धा सारडा दक्षिणांचल रनरअप।

बास्केट बॉल – पूर्वांचल विनर, दक्षिणाचंल रनरअप।

क्रिकेट – मध्यांचल विनर, दक्षिणांचल रनरअप।

समापन समारोह – 20 दिसम्बर 2017 प्रातः 11 बजे स्पेस सर्कल प्रांगण में ट्रोफी प्रदान एवं समापन समारोह में विशिष्ट अतिथि हरि किशन जी राठी, श्री कैलाश जी काबरा, श्री खेलों के विजेताओं का नाम घोषित कर उन्हें शील्ड प्रदान की। कोलकाता प्रदेश अध्यक्षा श्रीमती निर्मला जी मल्ल ने धन्यवाद ज्ञापन पेश किया। संचालन कोलकाता प्रदेश सचिव सीमा भट्टड़ द्वारा किया गया। समस्त

कमल जी गांधी, श्री गोविन्द जी माहेश्वरी कोटा तथा आर्शीवाद हेतु वरिष्ठ समाज सेवी श्री शिव किशन जी मूंदड़ा, राष्ट्रीय व कोलकाता प्रदेश के पदाधिकारीगणों ने मंच को सुशोभित किया। महेश वंदना प्रदेश संगठन मंत्री रेखा भिमानी द्वारा की गई। सभी का स्वागत पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह द्वारा किया गया। स्वागताध्यक्ष शोभा जी सादानी ने कार्यक्रम सफल संपादन हेतु कोलकाता प्रदेश की जो समितियां बनाई गई थीं, उन समस्त संयोजकों को मंच पर बुला कर पुष्पगुच्छ द्वारा सम्मानित किया। समितियों के नाम इस प्रकार रहे मेला समिति, मंच व्यवस्था समिति, खेल कूद समिति, यातायात समिति, पूछताछ समिति, पंजीकरण समिति, आवास समिति, हॉल व्यवस्था समिति, रंगोली समिति, कुकरी समिति, मैरिज ब्यूटी समिति, रैम्प वॉक, हेल्थ पांइट तथा खानपान व्यवस्था समिति। इसके पश्चात सोनाली मूंदड़ा राष्ट्रीय सुकीर्ति प्रभारी तथा मोनालीसा भिमानी ने समस्त कार्यक्रम विशेष मार्गदर्शन राष्ट्रीय समिति प्रभारी शोभा जी सादानी, इन्द्रा गांधी, पूर्वांचल उपाध्यक्षा सरला जी काबरा, पूर्वांचल सहमंत्री मंजू जी कोठारी एवं कोलकता प्रदेश अध्यक्षा निर्मला जी मल्ल, राष्ट्रीय सुकीर्ति प्रभारी सोनाली मूंदड़ा ने प्रदान किया।

''जो दृढ़ निश्चय आपने किया था
कायल हैं हम सभी
धन्यवाद आभार के दो शब्द हैं कहनें
आपकी लगन मेहनत परिश्रम के लिये
सफलता आगे भी मिले आप सभी को इसी तरह''

सौ.कल्पना गगरानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष

सौ.आशा माहेश्वरी
राष्ट्रीय महामंत्री

सौ.निर्मला मल्ल
प्रदेश अध्यक्ष

सौ. सीमा भट्टड
प्रदेश सचिव

'उर्जिता 2017' समापन समारोह की झलकियाँ

श्रीमती मंजू मानधाना
दिल्ली

मंथन के मोती

नारी सशक्तिकरण पारिवारिक / सामाजिक हित में पक्ष या विपक्ष

सुलेखा समिति की चतुर्थ प्रतियोगिता वाद विवाद लेखन प्रतियोगिता के रूप में 1 अक्टूबर 2017 को घोषित होकर 25 नवंबर 2017 को समाप्त हुई। 26 प्रदेशों से 90 प्रस्तुतियां आईं। समिति की नियमों के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता के कारण ही निश्चित की गयी अवधि में प्रतियोगिता समापन सफलतापूर्वक संभव हो पाता है। अनवरत चलने वाली प्रतियोगिताओं का क्रम इस बात का साक्षी है कि प्रदेश पदाधिकारीगण और समिति सदस्यों की राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा निर्देशित कार्यों को परिणिति तक पहुंचाने में कितनी गहन आस्था है। बौद्धिक चेतना को उद्वेलित कर सम–सामायिक विषयों पर चर्चा और चिंतन मनन के माध्यम से समाज में नव जागरण की एक छोटी सी कोशिश इस प्रतियोगिता श्रृंखला का परम उद्देश्य है।

जीवन में अच्छाई संग बुराई, उजाले संग अंधेरा और दिन संग रात इस सब का होना ये इंगित करता है कि हर बात के दो पहलू होते हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता है इसके माध्यम से समाज में पनप रही विचार धारा सबके सम्मुख पहुंचाने के प्रक्रिया बाद विवाद के जरिये की गयी है। पक्ष या विपक्ष देश, काल, परिस्थिति और परिवेश पर निर्भर करता है। इस ज्वलंत सामाजिक विषय से आज देश की आधी आबादी के हित–अनहित जुड़े हुए हैं और इस विचारधारा के मध्य में बहुत महीन सीमा रेखा है। एक के लिए जो सही है वह दूसरे के लिए गलत हो सकता है। सही गलत का विचार और निर्णय हर एक का अपना होता है जिसे लेखिका ने लेखनीबद्ध किया और समिति के माध्यम से हमने जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। इस मंथन प्रक्रिया में हमने उस विचार विष्लेशण को समझने का प्रयत्न किया है जो समाज में निहित होकर मानस को आंदोलित करती है।

पक्ष में कुछ लेखिकाओं ने सरकार द्वारा बनाये स्त्री हित के कानूनों का ब्यौरा दिया, महिला शिक्षा पर सभी ने जोर दिया। पुरूष की सामंतवादी प्रवृति पर अंकुश लगाने पर बल दिया। प्राचीनकाल में नारी कितनी स्वावलम्बी थी, इस पर सभी ने कमोवेश लिखा। एक दो ने तो सशक्तिकरण को ग्रामीण पिछड़े इलाके के कमजोर तबके से जोड़कर लिखा और बताया कि उस तबके की स्त्रियों के सशक्त हुए बिना सशक्तिकरण की बात अधूरी है, आधुनिकता की वकालत सभी ने की, नारी के स्वावलम्बी बनने पर भी जोर दिया। कुछ ने अधिकारों के साथ कर्तव्य निर्वहन पर भी लिखा। नियमावली में बार–बार लिखने के बावजूद कई लोगों ने समन्वयनात्मक तरीके से लिखा और इसीलिए प्रतियोगिता से बाहर हुए।

विपक्ष पर भी बहुत लोगों ने अच्छा लिखा। आधुनिक परिधान, अनावश्यक स्वतंत्रता, आधुनिक परिवेश के बिगड़ाव का कारण माना। अति हर चीज की बुरी होती है इस पर कई लोगों ने बहुत अच्छा लिखा। अति उच्च शिक्षा के बाद स्वावलम्बन और जरूरत होने पर भी बाहर जाकर नौकरी करना और उससे आए अहम् से पति पत्नि का आपसी टकराव होना, इस पर भी कई लोगों ने किंचित आपत्ति उठायी। विवाहेत्तर संबंधों पर भी लेखनी उठी। बुजुर्गों और बच्चों की अनदेखी को भी नारी सशक्तिकरण से आयी उच्श्रृख्लता से जोड़कर देखा गया। यहां भी कई प्रविष्टियां समन्वयात्मक तरीके से लिखने के

कारण प्रतियोगिता से बाहर हुई। एक दिलचस्प बात सामने आयी कि सुदूर कस्बों के लोगों ने तो विपक्ष पर खुल कर लिखा पर महानगरीय सभ्यता से पक्षधर विपक्ष पर लिखने से कतरा रहे थे। एक विष्लेशण सामने आया कि जिस दिन नारी दूसरी नारी का सम्मान करना सीख जाएगी, नारी को उसके हिस्से का आसमान छूने की खुले मन से स्वतंत्रता मिल जाएगी, वैचारिक चिंतन करने की आजादी मिल जाएगी उसी दिन से सशक्तिकरण पूर्णता की ओर उन्मुख होने लगेगा।

भाषा की अशुद्धियां, लेखक और प्रदेश का नाम न लिखा जाना एवं साफ प्रिंट न होना, ये कई कारण प्रविष्टि की जांच प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। आप ही सोचिये नाम, पता विहीन प्रविष्टि होने पर हम अंक कैसे देंगे? शब्द सीमा के कारण कई प्रविष्टि सर्वोत्तम की श्रेणी में होकर भी पीछे रह गयी, उनमें या तो 500 शब्द थे या 800 से ज्यादा शब्द थे।

सुलेखा समिति राष्ट्रीय नेतृत्व का विशेष आभार प्रकट करती है। समिति की कार्यप्रणाली पर उनका दृढ़ विश्वास ही प्रतियोगिताओं को सफलता के नए क्षितिज छूने को प्रेरित करता है। हमारे समाज की लेखन प्रतिभा की धनी उस नारी शक्ति को नमन जो अति व्यस्तता के बावजूद भी अपने विचारों को मूर्त रूप देकर, सुन्दर और व्यवस्थित तरीके से सबसे समक्ष रख प्रतियोगिता को सफल बनाने में योगदान देती है।

अंत में सुलेखा समिति सदस्यों व हमारे निर्णायक मंडल का मैं विशेष धन्यवाद करती हूं जिनके महती प्रयासों और कार्य करने की अद्भुत क्षमता और लगन के फलस्वरूप प्रतियोगिता के निर्णय आप तक निश्चित समयावधि में पहुंच पाते हैं।

सुलेख समिति प्रभारी
मंजू मानधाना, दिल्ली

चतुर्थ राष्ट्र स्तरीय सुलेखा समिति द्वारा आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता नारी सशक्तिकरण पारिवारिक / सामाजिक हित में ''पक्ष''।

श्रीमती सूरज माहेश्वरी

सम्पूर्ण सृष्टि में सभ्यता और संस्कृति के प्रारंभ में नारी है, किन्तु कालान्तर में धीरे–धीरे सभी समाजों में सामाजिक व्यवस्था मातृ–सत्तात्मक से पितृ–सत्तात्मक होती गई और नारी समाज के हाशिए में चली गयी।

समाज में महिला सम्बन्धी प्रयुक्त अवधारणाओं में प्रथम अवधारणा है ''नारीत्व''। अर्थात स्त्री–पुरूष की शारिरिक बनावट, आवाज आदि में प्राकृतिक भेद। इसे स्त्री ने स्वीकार करके अपने तौर–तरीके, आचार–व्यवहार, अपने जीवल शैली में ढ़ाल लिया है।

द्वितीय अवधारणा है ''नारीयता''। अर्थात जन्म से ही बालिका को क्षमा, भय, लज्जा, सहिष्णुता जैसे गुणों को अंगीकार करने की शिक्षा का निर्धारण पुरूष प्रधान मानसिकता वाले समाज द्वारा किया जाता रहा है।

तृतीय अवधारणा है ''नारीवादी'' अर्थात नारी के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को बौद्धिक एंव क्रियात्मक रूप प्रदान करती है। मानवजीवन के केवल शिकार युग में ही नारी को शिखर स्थान मिला, क्योंकि उसका निशाना सधा हुआ था और शरीर में चपलता थी। ऋषी युग आते ही बैलों को खेत में और नारियों को चूल्हे चौके में जोत दिया गया। संभवतः पुरूष ने यह खेल आइने के ईजाद के साथ ही शुरू किया कि हे रूपमुग्धा तुम स्वंय को सदैव निहारती ही रहो। तुम अपनी सुंदरता में ही सिमट कर रह जाओ। पुरूष बादल की तरह बरसकर गुजर जाता है, और वह

पृथ्वी की तरह प्यासी रह जाती है। ''मैं नदिया फिर भी प्यासी भेद यह गहरा बात जरा सी'' शैलेन्द्र की लिखी यह बात उस सच्चाई के परे कुछ नहीं है।

शास्त्रों से संविधान तक में महिला को पूज्यनीय स्थान दिया गया है परंतु व्यवहारिक जीवन में उसे दोयम दर्जे का नागरिक ही माना जाता है। संस्कार के नाम पर उसे बांधने के लिए अनेक बेड़ियां बनाई गई है। दुर्गा के इस देश में आज प्रत्येक नारी के मन में यही सवाल है कि सदियों से शक्ति को पूजने वाले इस देश में क्यों कोख में ही बेटी को मार दिया जाता है, गुड़ियों से खेलने वाली गुड़िया क्यों हवस का शिकार हो जाती है, अपशब्दों की गाली उसके नाम की पुकारी जाती है, ऑखों में हजारों अरमान संजोयी हुई बेटियां क्यों दहेज के चौराहे पर नीलाम हो जाती है। महिलाओं ने सदियों से दमन और दोहरे मापदण्ड सहे है। परंतु आज के इस दौर में नारीवाद परिपेक्ष्य की विचारधारा को अनेक चुनौतियां मिल रही है। वह शिक्षित तो हो रही है, पर कई बार उसे उस शिक्षा को जीवन में नहीं उतार पाने की वजह से कई महत्वपूर्ण अवसर हाथ से छूट जो हैं। आज की स्त्री व्याकुल है आगे बढ़ने के लिए, परन्तु सच तो यह है कि पुरूषप्रधान मानसिकता ने स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार ही नहीं किया।

मानव समाज के विकास का यह खुला रहस्य है। स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा, रोजगार तथा पारिवारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में नारी की पुरूषों के बराबर सहभागिता अनिवार्य है। तब ही समाज का संपूर्ण विकास हो सकेगा। नारी का विकास केवल नारी की खुशहाली की दृष्टि से ही आवश्यक नहीं है बल्कि परिवार के संपूर्ण समाज के संतुलित विकास की दृष्टि से भी अनिवार्य है। अब जरूरत है महिलाओं को सशक्त बनाने की और संकीर्ण सोच में बदलाव लाने की। आज की महिला उजियारा करती सुनहरी धूप की तरह अपनी अभिलाषाओं को मूर्त रूप देना चाहती है, परिन्दों की तरह सफलता के पंख फैलाकर आसमान में उड़ना चाहती है, सतरंगी सपनों में इन्द्रधनुषी रंग भरना चाहती है। नारी भी छू सकती है आकाश बस मौके की है उसे तलाश।

आज की नारी धैर्यवान है, कल्पनाशील है। महिला जिसे केवल भोग एवं वंशबेल बढ़ाने का जरिया समझा जाता था, आज वायुयान उड़ाने लगी है, जिम्मेदारियों का बोझ परिवार पर पड़ा तो हर क्षेत्र में जमीन से आसमान तक पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़ी हो गयी है। स्त्री की क्षमताओं की कोई सीमा नहीं है। आज वह हिमालय का उच्चतम शिखर छूती अंर्तराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में गोल्ड मैडल प्राप्त कर पूरे देश को गर्वित करती है। चुनाव में विजयी होकर अपनी जीत का परचम फहराती है।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने भी कहा था – मैं किसी समुदाय का विकास महिलाओं द्वारा की गई प्रगति से नापता हूं। निःसंदेह घर–गृहस्थी का निर्माण हो या राष्ट्र की रक्षामंत्री की कमान, परिवार समाज और राष्ट्र का निर्माण नारी के योगदान के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। वह माता, बहिन, पत्नि, पुत्री एवं मित्र रूपी विविधा स्वरूपों में पुरूषों के जीवन के साथ आत्मिक रूप से सम्बन्धित है। कवि गोपालदास नीरज ने जीवन में नारी की महत्ता को इस शब्दों में अभिव्यक्त किया है।

''अर्धसत्य तुम, अर्ध स्वप्न तुम,
अर्ध निराशा आशा, अर्ध अजित जित,
अर्ध तृप्ति तुम, अर्ध अतृप्ति–पिपासा
आधी काया आग तुम्हारी, आधी काया पानी
अर्धागिंनी नारी! तुम जीवन की आधी परिभाषा।

बॉक्सर मैरीकॉम के जीवन से प्रेरित फिल्म का एक संवाद था जिसमें मैरीकॉम का कोच उससे कहता है कि अब दो बच्चों की मां बनने के बाद तुम्हारी शक्ति दोगुनी हो जाएगी और तुम विश्व विजेता खिताब को

तीसरी बार भी जीत पाओगी। और अभी कुछ दिन पूर्व भी मैरीकॉम ने पांचवा खिताब जीत कर देश का नाम गौरवान्वित किया। परंतु क्या सिर्फ संगोष्ठी, परिचर्चाओं तक ही सीमित है नारी के अंतर्मन की पीड़ा ?

चांद सितारे पे उसकी नजर है,
और कहां रखने है पांव इसकी भी खबर है।

कल से बेहतर आज व आज से बेहतर आने वाला कल बनाने की सफलता की कुन्जी उसके हाथ में है। अच्छी पारिवारिक योजना से वो परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रबंधन करने में पूरी तरह सक्षम है। परिवार सशक्त होगा तो पूरा समाज और देश अपने आप सशक्त और मजबूत हो जायेगा। वह काल के कपाल पर प्रहार कर आगे बढ़ना जानती है, मरूस्थली को चमन में संवार सकती है।

इसके लिए बदलाव की शुरूआत घर से ही करनी पड़ेगी। हर परिवार में महिला साक्षरता, महिला सशक्तिकरण की अलख जगानी होगी। इसके लिए जरूरी है कि परिवारजनों के साथ हर घर में सीधे संवाद का माहौल बनाया जाये, वह क्या कहना चाहती है उसे सुना और समझा जाए। स्कूली छात्राओं को सेल्फ डिफेंस क्लासेस में जूड़ो–कराटे, बॉक्सिंग सिखाई जाए। खुद की सुरक्षा करना सिखाया जाए।

आज वक्त की पुकार है उठो, जागो, आगे बढ़ो। सशक्तिकरण के दीप हम जलाये, आप जलाये, और असंख्य दीप एक साथ जल उठे जिससे परिवार व समाज में सकारात्मकता की रोशनी जगमगा उठे। आज का समय यही कहता है प्रशस्त करने दिया जाये उसे अपनी राह बढ़ने दीजिए, उसे सफलता के शिखर की ओर बढ़ने दीजिए।

डॉ. श्रीमती सूरज माहेश्वरी
जोधपुर राजस्थान
पश्चिमी राजस्थान प्रदेश

''नारी ममता की धारा है, नारी मजबूत कंधों का सहारा है। अंधेरे में वो राह दिखाए बुझते दीपक को वो फिर से जलाए''।।

श्रीमती प्रियंका माहेश्वरी

अनन्त गुणों की आगार, पृथ्वी जैसी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र जैसी गंभीरता, चन्द्रमा जैसी शालीनता, पर्वतों जैसी मानसिक उच्चता नारी के हृदय में दृष्टिगोचर होती है। दया, करूणा और स्नेह की मूर्ति तथा शक्ति में चामुण्डा जैसी प्रचण्ड नारी को, देश के निमार्ण की आधारशिला माना जाता है। नारी गौरवमयी तथा स्वावलम्बी जीवन जीना चाहती है। प्राचीन काल में वो अधिकार छीन लिए गए और उसकी निष्ठा, लगन, त्याग तथा ममता की उपेक्षा चरम सीमा पर पहुंची तो विद्रोह के स्वर फूटे। उसने अपनी सुप्त शक्ति को झकझोर कर जगा दिया। नारी सशक्तिकरण कोई सत्ता की उथल पुथल या कोई चुनौती नहीं है। यह तो एक जागृति है।

''नारी यदि संकल्प करे तो
काया कल्प धरा का कर दे,
अपनी शक्ति से वो देखो,
भूतल को नन्दनवन कर दे''।।

परिवर्तन तो संसार का नियम है। देश में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युगानयुग परिवर्तन होते रहे हैं। जिस प्रकार माला की एक भी कड़ी कमजोर होने पर पूरी माला विखर जाती है उसी प्रकार परिवार का या समाज का एक वर्ग कमजोर हो तो उसका प्रभाव सब पर होता है। समाज में सभी क्षेत्रों में महिलाओं को बराबरी में लाना होगा। महिलाओं को स्वच्छ और उपयुक्त पर्यावरण

को उपयुक्त करना होगा। ताकि वो हर क्षेत्र में अपना स्वतंत्र फैसला ले सके। चाहे वो स्वंय, देश, परिवार, समाज किसी के लिए भी हो। यही सशक्तिकरण है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ पुरूषों की नकल करना या उन्हें अशक्त करना नहीं है। यह महज लोगों के दिमाग में बसी भ्रांतियां है। नारी सशक्तिकरण के तहत कोई भी नारी किसी भी पुरूष का हक छीनना नहीं चाहती बस अपना हक लेना चाहती है।

''नारी सशक्तिकरण उचित है,
चाहे मार्ग कितना कठिन हो,
बाधाएं तो आयेगी, अहम् भी टकरायेंगे,
पर विजय सशक्ति की निश्चित है।''

समाज की आधी से कम आबादी नारी ही दुर्बल रही तो समाज दुर्बल होगा। फिर समाज की उन्नति कैसे संभव है ? जैसे गाड़ी के पहिए बराबर से चलते हैं तो सुचारू रूप से गाड़ी चलती है। यदि एक पहिया कमजोर हुआ या उसमें हवा न हो तो गाड़ी पंचर हो जायेगी या गाड़ी ठीक से चल न पायेगी। गृहस्थी की गाड़ी सुचारू रूप से चलने के लिए नारी का सशक्त होना जरूरी है। भारतीय संविधान में भी पुरूष व स्त्री को भी समान अधिकार दिए गए है। क्या बछेन्द्री पाल की एवरेस्ट विजय से तेनजिंग हिलेरी की उपलब्धियां प्रभावित हुयी थी? क्या लता मंगेशकर के विश्वविख्यात होने से मोहम्मद रफी या मुकेश की लोकप्रियता में अंशमात्र भी प्रभाव हुआ है ? क्या मिताली राज के उत्कृष्ट प्रदर्शन से विराट कोहली के प्रदर्शन में तनिक भी निःशक्तिकरण की झलक दिखाई पड़ती है? बिल्कुल नहीं। नारी तो सिर्फ अपना अधिकार पाना चाहती है। एक पत्नि अपने पति को ही सर्वस्व और सर्वोपरि मानती रही है। सहनशीलता की मूरत नारी पर जब परिवार के लोगों का अन्याय, दुराचार व अत्याचार असहनीय होने लगा तब नारी सशक्त बनी और अपने पर हो रहे अत्याचार पर पूर्ण विराम लगाने की ठान ली। तो क्या गलत है? कब तक घुट घुट कर जिए? अपनी आत्मा को कब तक दुखी करेगी। ना दुःख दो न दुःख लो वाली सोच जागृत हुई। फिर चाहे लोग उसकी सहनशीलता में कमी कहे परन्तु मैं इसे गलत नही मानती। आनंदित रहना हर आत्मा का अधिकार है। नारी की नवजागृति ने उसकी प्रतिभा को निखारा और वह परिवार को समृद्ध बनने में सहयोगी बनी। अब वो दासी नहीं अपने घर की रानी बनी है। उस अबला के ऑचल में दूध है पर ऑखों में पानी नहीं। सपने साकार करने की दृढ़ता है। ये सशक्तिकरण का ही नतीजा हैं। ''नारी सशक्तिकरण से हो रहा भारत का नवनिर्माण, नारी शक्ति से मिट रहा जन मानस में फैला अंधकार'' नारी सशक्तिकरण उसकी वो क्षमता है, जिसमें उसकी योग्यता विकसित की जाती है। जिसमें वह अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वंय ले सके। महिला सशक्तिकरण में हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं जहां महिलायें अपने परिवार व समाज के सभी नियमों को अपनी संस्कृति को, और धर्म को ध्यान में रखकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद बने। नारी हमेशा से ही सुपीरियर है, उसे जो देते हें उसे कई गुना बढ़ाकर देने की शक्ति नारी में है। उसे मकान देते है, तो वह अपनेपन से भरा घर देती है। एक हंसी और थोड़ा सा प्यार देने पर वो अपना दिल न्यौछावर कर देती है। और यदि उससे गलत व्यवहार अन्याय करेंगें या स्वाभिमान पर ठेस पहुचाएंगें तो वह पलट कर वार करने को तैयार है। यही सशक्तिकरण है, ऐसे सशक्तिकरण के मैं पूर्णरूप से पक्ष में हूं। नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई और आज दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, भ्रूण हत्या, सती प्रथा आदि भयानक सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में वह सक्षम कैसे हुई? वह मैं बताती हूं, नारी शिक्षित हुई शिक्षा से शक्ति बढ़ी, शिक्षा से उसकी बुद्धि अधिक विकसित हुई। उचित अनुचित का ज्ञान हुआ। उसे सपनों की उड़ान भरने को जैसे पंख मिल गये। निर्धनता दूर

करने में भी वो सक्षम हुई। आजाद पंछी की तरह स्वतंत्र वायुमण्डल में सांस ले सकी परंतु धिक्कार है ऐसे लोगों पर जो लड़की हो तो जबरदस्ती भ्रूण हत्या करवाते है। तब उस मां की गरिमा को ठेस लगती थी। उसकी आत्मा रो पड़ती थी। पर अब नारी सशक्तिकरण से उसमें विरोध करने की हिम्मत आ गई है। अरे ये समझते क्यों नहीं ? बेटी नही तो मॉ भी नहीं होगी, और मॉ नहीं होगी तो बेटा कहॉ से मिलेगा ? अंत में मैं बस विराम देते हुए यही कहना चाहती हूं।

''पूर्व युग सा आज का जीवन अब नहीं लाचार,
सशक्तिकरण से नारी जीवन का खिल उठा संसार,
खिल उठी कली कली नारी के विकास का उपवन सज गया,
नारी सशक्तिकरण से नया प्रभात आ गया।''

प्रियंका माहेश्वरी
मध्य उत्तरप्रदेश, कानपुर

विपक्ष

श्रीमती पारूल लोहिया

नारी स्वयं शक्ति का रूप है। सृजन की शक्ति को भला सशक्तिकरण की क्या आवश्यकता है। आज नारी सशक्तिकरण के नाम पर जिस तरह समाज व परिवार को तोड़ा मरोड़ा जा रहा है मैं उस के विपक्ष में हूं।

इतिहास साक्षी है कि वैदिक युग में परिवार माता के नाम से जाने जाते थे। स्त्री की घर की मुखिया होती थी। मैं उस संस्कृति से हूं जहां स्त्री को पाकशास्त्र से लेकर राजनीति, घुड़सवारी व रण कौशल तक सभी कलाऍ सिखाई जाती थी। घर के कामकाज के साथ जहां राज–कार्य एवं युद्ध में भी पुरूषों का साथ देती थी। हर स्त्री अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार समाज निमार्ण में सहयोग देती थी। भारत आज भी अपनी सभी सभ्यता, संस्कृति और विरासत के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। बिना स्त्री के कोई भी धार्मिक सामाजिक कार्य पूरा नहीं होता था। मध्यकालीन युग में मुगलों के आने के बाद बदलती परिस्थितियों व सामाजिक परिवेश के कारण समाज में कुरीतियां व रूढ़िवादिता ने जन्म लिया तथा सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक बदलाव आया। लेकिन स्वतंत्रता के बाद कई समाज सुधारकों के प्रयास से परिस्थितियां वापस बदलने लगी। आधुनिक युग में समानता की दुहाई देते हुए परिवार व समाज की जिम्मेदारियों को नजरअंदाज करना नारी–सशक्तिकरण का मापदंड बन गया है। आज की नारी पारिवारिक जिम्मेदारियों व स्वंय सिद्धा होने के मध्य सामंजस्य बनाने में असफल हो रही है। समाज के सभी बंधनों से मुक्त अपने निर्णय की निर्माता खुद को मानती है। अपने निजी स्वच्छंदता को ही महत्व देते हुए संयुक्त परिवार की अवहेलना करने लगी है। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार बनने लगे है। और अब इस नारी–सशक्तिकरण की मार से तो वह भी टूटते नजर आ रहे है। एक वक्त था जब बचपन से ही परिवार के सदस्यों के बीच पलते बच्चों का मानसिक व शारिरिक विकास अपने आप होता था वह रिश्तों, परिवार व समाज को महत्व देते थे। आज इस टूटे परिवारों के परिवेश में तो वह शायद पूरी तरह से अपने माता–पिता को भी नहीं समझ पाते।

संसार दो भागों में बंट गया एक नारी दूसरा पुरूष। दोनों के मानसिक व शारिरिक बनावट के अनुसार कार्य बांटे गए हैं, जिनका अनुसरण करना आज पिछड़ापन माना जाता है। हालांकि विश्व के बेहतरीन पाक–कला निपूर्ण पुरूष ही हैं, मगर फिर भी मां के हाथ के खाने की खुशबू ही अलग है। मां के आंचल में बच्चा स्वंय को सदैव सहज व सुरक्षित महसूस करता है। छत्रपति शिवाजी की मां ने बचपन से ही

उन्हें वीर गाथाएं सुनाकर मानसिक रूप से इतना मजबूत बना दिया था कि इतिहास को ऐसा कुशल योद्धा मिला। आज की नारी अपनी आजादी के नाम पर बच्चे की परवरिश का जिम्मा दाईयों या विद्यालयों के सुपुर्द करके नारी सशक्तिकरण की बातें करती है। इस एक शब्द की आड़ में कितनी नारियों ने अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ रखा है। क्या स्त्री पहले कुशल गृहणी के साथ सफल व्यवसाई नहीं थी? मुझे याद है कि मेरी मां घर का सारा काम करने के बाद हमें पढ़ाती थी। शाम को पापा के साथ उनके व्यवसाय के सारे खाते लिखती थी। कितनी ही बार पापा व्यवसाय संबंधी मुश्किलों के बारे में वे मां से विचार–विमर्श करते थे। अधिकतर घरों मे यही परिवेश था। कहीं भी नारी सशक्तिकरण के नारे नहीं गूंजते थे। फिर भी घर एक योजनात्मक व कुशलता से चलते थे। आपस के मतभेद बंद कमरों में सुलझ जाया करते थे। आज की तरह छोटी सी अनबन से घर नहीं टूटा करते थे। स्त्री पुरूष एक दूसरे के पूरक माने जाते थे। आर्थिक सहयोग के लिए अपनी योग्यता अनुसार अगर स्त्री कार्य कार्य करती है तो वह स्वभाविक है। इसे नारी–सशक्तिकरण का नाम क्यों दिया जा रहा है ? रानी लक्ष्मीबाई, अवंतीबाई, रानी राजेश्वरी, रजिया सुल्तान, नूरजहां, अहिल्याबाई, कस्तूरबा गांधी, इंदिरा गांधी, और न जाने कितने अनगिनत नाम हैं जिन्होंने हर युग में अपनी क्षमता का परिचय दिया।

छोटे वस्त्र पहनकर सिगरेट का धुआं उड़ाना व देर रात घर आना ही क्या नारी–सशक्तिकरण है ? बिना विवाह किए किसी भी आदमी के साथ संबंध बनाना व साथ रहना भी इसी शब्द की देन है। खुलेआम सामाजिक मर्यादाओं को भंग किया जा रहा है। जो कानून महिला सुरक्षा व हित के लिए बनाए गए थे, उनका दुरूपयोग हो रहा है। नारी–सशक्तिकरण के नारे देने वालों से मैं पूछना चाहती हूं कि क्या अब महिलाएं सचमुच में मजबूत हो गई हैं? क्या यौन हिंसा पहले से कम हुई है? क्या वाकई परिवार में दांपत्य जीवन पहले से मजबूत हुए हैं ? हालात कहां सुधरे हैं बल्कि प्रतिदिन खराब हो रहे हैं लड़कियों की बढ़ती उम्र में विवाह संबंधी समस्याएं, देर से बच्चों के जन्म में प्राकृतिक व शारिरिक समस्याएं बढी है। साथ ही साथ विवाह पश्चात टूटते संबंधों ने परिवावर व समाज में असुरक्षा व एकाकी जीवन जैसी कुंठाओं को जन्म दिया है। बच्चों की परवरिश को पूरा समय न देने से बच्चे उम्र से पहले ही बड़े होने लगे हैं। जिनसे उनमें व्यसन जैसी बुरी लतें आम हो गई हैं। बाल अपराध बढ़ते जा रहे हैं। जो मापदंड परिवार व समाज को बांधते थे उन्हें दकियानूसी जंजीरों का नाम दिया जा रहा है। नारी सशक्तिकरण सिर्फ एक भ्रम मात्र है, सत्य तो यह है कि समाज को एक पढ़ा–लिखा युवा वर्ग चाहिए जो स्त्री को मात्र भोग की वस्तु न समझे बल्कि उसे उचित सम्मान दे। ऐसे संस्कार का बीज मां ही परवरिश के दौरान बच्चे में डालती है तथा उज्जवल समाज की नींव रखती है। कहीं नारी–सशक्तिकरण पुरूष व नारी के बीच की दूरियां इतनी न बढ़ा दें कि संबंधों के बीच संतुलन ही बिगड़ जाए। इससे परिवार व समाज को घातक परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। खाली इस शब्द के अर्थ को अच्छा व प्रभावशाली ना मानकर उसके दुष्परिणामों पर गौर किया जाना चाहिए तथा सही दिशा में उपयुक्त कदम उठाए जाने चाहिए।

पारूल लोहिया

दिल्ली प्रदेश, उत्तरी क्षेत्र

विपक्ष

श्रीमती पूजा दम्माणी

सर्वप्रथम एक नारी होते हुए भी नारी सशक्तिकरण का विरोध करने के लिए क्षमाप्रार्थी हूं। मेरे दृष्टिकोण में तो नारी अशक्त तो तब थी जब वह शिक्षा से वंचित, घर में कैद, दहेज प्रताड़ित, सती

होने को मजबूर आदि कुप्रथाओं से ग्रसित थी। पर आज की सशक्त नारी का विस्तृत दायरा मेरी समझ से परे है। कुछ तो अपनी सशक्तता का प्रभाव व महत्व दिखाने इस हद तक आगे बढ़ रही हैं कि उन्हें सही गलत का ध्यान नहीं व संबंधों की मर्यादा को तार तार कर देने में भी संकोच नहीं। वे पुरूषों से बराबरी, उनकी तरह स्वतंत्र जिंदगी, अधिकार पाने में अपनी शान समझ रही है। जब ईश्वर ने नर–नारी की रचना व उनकी शक्ति में समानता नहीं की तब बराबरी कैसी ?

''जिस शक्ति का तू गान करे,
वाह री नारी तेरी शक्ति,
जिस शक्ति की तू मांग करे,
वो खुलापन है ना ही शक्ति।
विदेशी रंग में रंग कर,
अपने जीवन को सजा मत दे,
अपने ही घर में आग लगा,
बाहर खड़ी मजा मत ले।
मेरा अभिप्राय यह नहीं,
तू अपनी शक्ति घटा,
पहले शक्ति का अर्थ समझ,
फिर अपनी शक्ति बढ़ा।''

नारी नाम व धन कमाकर सशक्त तो हो रही है पर उसका दुष्परिणाम –

1. संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। समयाभाव के कारण घर, परिवार, समाज व पति के प्रति दायित्व सही प्रकार से नहीं निभा पाती।

2. बच्चों को मां की ममता से वंचित कर डे केयर, नौकर, ट्यूटर, होस्टल के भरोसे छोड़ना शान समझती है। उसमें बच्चे स्मार्ट तो हो रहे हैं पर, क्या संस्कार व स्वास्थ्य में कमजोर नहीं ? समयाभाव में अपने बच्चों को शारिरिक व मानसिक रूप से विकसित करने, विज्ञापन में आने वाले टॉनिक, सप्लीमेंट फूड देकर फायदे से अधिक नुकसान दे रही है। बच्चों के हॉरमोन्स मे जो बदलाव दिख रहे हैं वे इन्हीं सब चीजों की देन है। बच्चे भी मां की गैरमौजूदगी में फास्ट फूड, बाजार में स्नैक्स, मोबाइल में गेम, चैट, टी.वी. आदि में अपना मन लगाते है। इसका परिणाम क्या अच्छा है ?

3. घर के बुजुर्ग नजरअंदाज हो रहे हैं। उनके पास बैठने वाला, प्यार के मीठे बोल बोलने वाले के लिए वे तरसते है। किसी के भी पास न तो उनके दुःख दर्द सुनने का समय है न ही उनसे अनुभव प्राप्त कर पारिवारिक व सामाजिक गतिविधियों को समझने का समय। आज सामाजिक व पारिवारिक कार्यक्रमों में नारियों की उपस्थिति बहुत कम रहती हे। जबाव मिलता है कि जॉब से समय नहीं मिल पाता, शनि–रवि मिलता है आराम के लिए। सामाजिक कार्यक्रम में नई पीढ़ी अपने विचार नहीं देगी तो समाज का विकास आज के दौर के अनुरूप कैसे होगा ?

4. अधिकतर नारी, नाम से सशक्त व शरीर से अशक्त हो रही है। उसके पास स्वयं के लिए समय नहीं है। फिर देर रात थक कर घर आना, मान लो पैसे से सभी सुविधाएं जैसे नौकर, कुक आदि मिल भी जायें, पर फिर भी बाहर के तनाव से, पुरूषों की अपेक्षा नारी जल्दी उबर नहीं पाती। चिंता चिता समान के तहत अन्दर से टूटने लगती है। संघर्ष जब स्वयं से हो तो स्थितियां बड़ी विचित्र व कठिन हो जाती है। तनाव, चिंता, अवसाद, कुंठा, द्वंद्व, निराशा, भावनात्मक असंतुलन व भटकाव जैसी अनेक समस्याओं से ग्रसित हो जाती है। वह धन व सम्मान अधिक पाने की लालसा के दलदल में धसती चली जाती है। क्या नारी सशक्तिकरण से हम यही चाह रहे थे ?

5. मानो कोई आत्मनिर्भर नारी ने बहुत सफलता व नाम कमा लिया तो ईगो, अंहकार इतना बढ़ जाता है कि आत्मनियंत्रण नहीं रह पाता। प्रतिस्पर्धा व प्रतियोगी माहौल में संभल पाना एक बड़ी चुनौती

साबित हो रहा है। परिणाम घर में लड़ाई, मनमुटाव, डाइवोर्स, आत्महत्या जैसी स्थितियां अधिक निर्मित हो रही है। क्या यह परिवार व समाज के हित में है ? आज के वर्तमान युग में फैशन में देखा देखी, अंग प्रदर्शित करते कपड़े पहनना, लेट नाईट पार्टीज में जाना, ड्रिंक्स, स्मोकिंग, ड्रग्स लेना, रिश्तेदारों से ज्यादा दोस्तों को महत्व देना ये सभी अंतरजातीय विवाह, निर्भया कांड जैसी घटनाओं को आमंत्रित करते है, बढ़ावा देते है।

6. आज की सशक्त लड़की कहती है कि जब अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊंगी, फिर शादी करूगीं। लड़का भी सर्वगुण सम्पन्न चाहिए। मैं चाहे माधुरी दीक्षित सी हूँ या नहीं, पर लड़का आमिर खान सा स्मार्ट चाहिए। परिणाम विवाह की उम्र 30 से ऊपर या फिर अन्तर्जातीय विवाह। फिर कहॉ रहेगा माहेश्वरी समाज? फिर जल्दी से मां न बनने के लिए अनेकों कारण और बाद में कंसीव करने में परेशानी होती है।

7. कुछ तो अपने को अधिक सशक्त करने के लिए माता–पिता / सास–ससुर को छोड़ कर धन की चाह में विदेश में बस जाती है। पर यही धन उनके जीवन के गोल्डन जुबली तक दवाइयों व डॉक्टरों की भेंट चढ़ जाता है। क्यों ? उनके व उनके परिवार के सही परवरिश के अभाव में और बैंलेंस शीट में जमा व खर्च बराबर हो जाता है।

''वो बुलंदी किस काम की दोस्तों,
इंसान चढे और इंसानियत उतर जाये।
जिन्दगी बस इतना दे तो काफी है,
सर से चादर न हटें, पांव भी चादर में रहे।''

अतः नारी सशक्तिकरण समाज व परिवार के हित में तभी रहेगा जब वह इनकी मर्यादा में रहकर अपनी इच्छा व महत्वाकांक्षाओं पर ध्यान दे।

पूजा दम्माणी
राजनांदगांव

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अन्तर्गत सुलेखा समिति की वाद–विवाद लेखन के रूप में आयोजित चतुर्थ प्रतियोगिता ''नारी सशक्तिकरण पारिवारिक / सामाजिक हित में पक्ष या विपक्ष के परिणाम निम्नलिखित हैं।

पक्ष

प्रथम स्थान–: डॉ.श्रीमती सूरज माहेश्वरी,
जोधपुर, पश्चिमी राजस्थान।
द्वितीय स्थान–: श्रीमती प्रियंका माहेश्वरी,
कानपुर, मध्य उत्तरप्रदेश।

विपक्ष

प्रथम स्थान–: श्रीमती पूजा दम्मानी,
राजनांदगॉव, छत्तीसगढ़।
द्वितीय स्थान–: सुश्री पारूल लोहिया, दिल्ली प्रदेश।
सांम्वना पुरूस्कार –:

पक्ष

डॉ.श्रीमती रचना बजाज, इंदौर, पश्चिमी मध्यप्रदेश।
श्रीमती मीनू झंवर, भीलवाड़ा, दक्षिणी राजस्थान।

विपक्ष

श्रीमती डिम्पल जागोटिया, दक्षिणी राजस्थान।
श्रीमती निर्मला न्याती, मंदसौर, पश्चिमी मध्यप्रदेश।

उपरोक्त पुरूस्कारों के अतिरिक्त कई प्रतियोगियों ने बहुत अच्छे प्रयास किए और राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचे। पुरूस्कार वितरण की नियत संख्या निर्धारित होने के कारण, हम चयनित प्रतियोगी सदस्यों के केवल नाम घोषित कर रहे हैं।

पक्ष

श्रीमती पूजा बिड़ला, पाली, पश्चिमी राजस्थान।
श्रीमती कार्तिका माहेश्वरी, सहारनपुर,
पश्चिमी उत्तरप्रदेश।
श्रीमती संतोष राठी, सूरत, गुजरात प्रदेश।

श्रीमती सीमा माहेश्वरी,
रेवाड़ी, पंजाब–हरियाणा प्रदेश।
श्रीमती मोनिका मूंदड़ा,
झाड़सुगुड़ा, उड़ीसा प्रदेश।
श्रीमती वर्षा अटल, बड़ोदरा, गुजरात प्रदेश।
श्रीमती ममता भट्टर, पूर्वी मध्यप्रदेश।
श्रीमती वर्षा सोमानी, जगदलपुर, छत्तीसगढ़ प्रदेश।
श्रीमती मोनिका बिड़ला,
श्रीगंगानगर, उत्तरी राजस्थान।

विपक्ष

श्रीमती पूजा गट्टानी, कानपुर, मध्य उत्तरप्रदेश।
श्रीमती श्रुति संतोष मोदानी, वांरगल, आंन्ध्रप्रदेश।
श्रीमती सुषमा चांडक, मुबंई प्रदेश।
श्रीमती उमा मूंदड़ा,
चेन्नई, तमिलनाडू पांडुचेरी केरल प्रदेश।
श्रीमती मनीषा सारड़ा,
पाली, पश्चिमी राजस्थान प्रदेश।
श्रीमती सुमन बंग धूत,
विजयनगर, मध्य राजस्थान प्रदेश।
श्रीमती बीना मालपानी,
बेलपुर, पश्चिम बंगाल प्रदेश।
श्रीमती शारदा अमिल साबू, गोंदिया, महाराष्ट्र प्रदेश।
श्रीमती सरला बजाज, गोलाघाट, आसाम प्रदेश।
द्वारा–: राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गगडानी
राष्ट्रीय महामंत्राणी श्रीमती आशा माहेश्वरी।
सुलेखा समिति प्रभारी मंजू मानधाना
संयोजिका मंडल – अनुराधा जाजू, अर्चना लाहोटी, मधू बाहेती, प्रभा जाजू, सविता काबरा, सीमा झंवर।

श्रीमती अनीता सोनी जी, नेपाल चैप्टर से कार्यकारी मंडल सदस्य निवर्तमान कार्य समिति सदस्य को नेपाल कांग्रेस ने असेंबली का एम.एल.ए. नियुक्त किया है

आपने समाज का गौरव बढ़ाया है, आपको बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएँ

सूरत के कपड़ा उद्यमी अनूप जाजू बने आयरन मैन

विश्व की सबसे मुश्किल माने जाने वाली मेडले रेस 12.45 घंटे में पूरी कर सूरत के कपड़ा उद्यमी अनूप जाजू सूरत के दूसरे आयरन मैन बने। 3 दिसम्बर को ऑस्ट्रेलिया के बुससेल्टन में इस दौड़ का आयोजन हुआ था।

कलयुग की गाथा

युधिष्ठिर को था आभास कलयुग में क्या होगा?

पाण्डवों का अज्ञातवास समाप्त होने में कुछ समय शेष रह गया था। पांचों पांडव एवं द्रोपदी जंगल में छुपने का स्थान ढूंढ़ रहे थे, उधर शनिदेव की आकाश मंडल से पाण्डवों पर नजर पड़ी। शनिदेव के मन में विचार आया कि इन सब में बुद्धिमान कौन है इसकी परीक्षा ली जाए ? शनिदेव ने एक माया का महल बनाया। कई योजन दूरी में उस महल में चार कोने थे, पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। अचानक भीम की नजर महल पर पड़ी और वो आकर्षित हो गया। भीम, युधिष्ठिर से बोला – भैया मुझे महल देखना है। भाई ने कहा जाओ। भीम महल के द्वार पर पहुंचा वहां शनिदेव दरबान के रूप में खड़े थे। भीम बोला – मुझे महल देखना है। शनिदेव ने कहा महल की कुछ शर्ते हैं। पहली शर्त महल में चार कोने हैं आप एक ही कोना देख सकते हैं। दूसरी शर्त महल में जो देखोगे उसकी सार सहित व्याख्या करोगे और तीसरी शर्त अगर व्याख्या नहीं कर सके तो कैद कर लिए जाओगे। भीम ने कहा – मैं स्वीकार करता हूं ऐसा ही होगा और वह महल के पूर्व छोर की ओर गया। वहां जाकर उसने अद्भुत पशु पक्षी और फूलों से लदे वृक्षों का नजारा देखा। आगे जाकर देखता है कि तीन कुएं हैं। अगल–बगल में छोटे कुंए और बीच में एक बड़ा कुआ। बीच वाले बड़े कुए में उफान आता है और दोनों छोटे खाली कुओं को पानी से भर देता है। फिर कुछ देर बाद दोनों छोटे कुओं में उफान आता है तो खाली पड़े बड़े कुंए का पानी आधा रह जाता है इस क्रिया को भीम कई बार देखता है पर समझ नहीं पाता और लौटकर दरबान के पास आता है। दरबान पूछता है कि क्या देखा आपने? भीम कहता है कि मैंने पेड़–पौधे, पशु–पक्षी देखे वो मैंने पहले कभी नहीं देखे थे, जो अजीब थे। एक बात समझ नहीं आई छोटे कुंए पानी से भर जाते हैं पर बड़ा कुंआ क्यों नही भर पाता। दरबान बोला आप शर्त के अनुसार बंदी हो गए है और बंदी घर में बैठा दिया। अर्जुन आया और बोला – मुझे महल देखना है, दरबान ने शर्त बता दी और अर्जुन पश्चिम वाले छोर की तरफ चला गया।

आगे जाकर अर्जुन क्या देखता है कि एक खेत में दो फसल उग रही थीं। एक तरफ बाजरे की फसल दूसरी तरफ मक्का की फसल। बाजरे के पौधे से मक्का निकल रही थी तथा मक्का के पौधे से बाजरा निकल रही थी। अजीब लगा कुछ समझ नहीं आया और वह वापिस द्वार पर आ गया। दरबान ने उससे पूछा क्या देखा – अर्जुन बोला महाशय सब कुछ देखा पर बाजरा और मक्का की बात समझ नहीं आई। शनिदेव ने कहा शर्त के अनुसार आप बंदी है।

नकुल आया बोला मुझे महल देखना है। फिर वह उत्तर दिशा की ओर गया और उसने देखा बहुत सारी सफेद गायें, जब उनको भूख लगती है तो वे अपनी छोटी बछियों का दूध पीती हैं उसे कुछ समझ में नहीं आया और वह भी द्वार पर आ गया। शनिदेव ने पूछा क्या देखा? नकुल बोला महाशय गाय, बछियों का दूध पीती है यह समझ नहीं आया तब उसे भी बंदी बना लिया। सहदेव आया बोला मुझे महल देखना है ओर वह दक्षिण दिशा की ओर गया। अंतिम कोना देखने के लिए क्या देखता है कि वहां पर सोने की बड़ी शिला एक चांदी के सिक्के पर टिकी हुई डगमग डोले पर गिरे नही, छूने पर वैसी ही रहती है समझ नहीं आया वह वापिस द्वार पर आ गया और बोला सोने की शिला की बात समझ नहीं आई तो वह भी बंदी हो गया।

चारों भाई बहुत देर से नहीं आये तब युधिष्ठिर को चिंता हुई वह भी द्रोपदी सहित महल में गये। भाइयों के लिए पूछा तब दरबान ने बताया वो शर्त अनुसार बंदी है। युधिष्ठिर बोला भीम तुमने क्या देखा ? भीम ने कुंए के बारे में बताया। तब युधिष्ठिर ने कहा यह कलियुग में होने वाला है एक बाप दो बेटों का पेट तो भर देगा पर दो बेटे मिलकर एक बाप का पेट नहीं भर पायेंगे। भीम को छोड़ दिया गया। अर्जुन से पूछा तुमने क्या देखा? उसने फसल के बारे में बताया। युधिष्ठिर ने कहा कि यह भी कलियुग में होने वाला है वंश परिवर्तन अर्थात ब्राह्मण के घर शूद्र की लड़की और शूद्र के घर बनिए की लड़की ब्याही जाएगी। अर्जुन भी छूट गया। नकुल से पूछा तुमने क्या देखा? नकुल ने गाय का वृतांत बताया। तब युधिष्ठिर ने कहा कलियुग में माताएं अपनी बेटियों के घर में पलेंगी। बेटी का दाना खायेंगी और बेटे सेवा नहीं करेंगें। तब नकुल भी छूट गया। सहदेव से पूछा तुमने क्या देखा, उसने सोने की शिला वाला वृतांत बताया। तब युधिश्ठिर बाले कलियुग में पाप धर्म को दबाता रहेगा परन्तु धर्म फिर भी जिंदा रहेगा खत्म नहीं होगा। आज के कलियुग में यह सारी बातें सच हो रही हैं।

1. विजेता कमिटमेंट करता है, पराजित के पास सिर्फ स्कीम होती है।
2. विजेता सोचकर बोलता है, पराजित बोलकर सोचता है।
3. विजेता अपने उसूलों पर टिका रहता है और छोटी मोटी बातों पर समझौता करता है और पराजित छोटी मोटी बातों पर अड़ा रहता है और उसूलों से समझौता कर लेता है।
4. विजेता नम्रता के साथ अपनी ठोस दलीलें पेश करता है, पराजित कड़े शब्दों में अपनी कमजोर दलीलें पेश करता है।
5. विजेता के पास कामयाबी के सपने होते हैं, पराजित के पास सिर्फ वायदे।
6. विजेता कहता है कि मुझे कुछ करना चाहिए, पराजित कहता है कुछ होना चाहिए।
7. विजेता अपनी उपलब्धियों को देखता है, पराजित अपनी तकलीफों को देखता है।
8. विजेता के पास हर समाधान है समस्या के लिए, पराजित के पास हर समस्या है समाधान के लिए।
9. विजेता के पास कुछ करने का प्रोग्राम होता है, पराजित के पास कुछ न करने का बहाना होता है।
10. विजेता देखता है कि क्या सम्भव है, पराजित देखता है क्या असम्भव है।
11. विजेता कहता है कि यह काम मुश्किल जरूरी है लेकिन मुमकिन है, पराजित कहता है यह काम मुमकिन जरूर है, परन्तु बेहद मुश्किल है।

आवेश

महाभारत के एक प्रसंग में आता है कि एक बार श्रीकृष्ण और बलराम सत्य की यात्रा के दौरान शाम हो जाने के कारण भयानक वन में रात्रि विश्राम के लिए ये निश्चय करके रूके कि दो–दो घंटे के लिए बारी–बारी से पहरा देंगें। उस जंगल में एक बहुत भयानक राक्षस रहता था, जब सत्याकि पहरा दे रहा था तो उस राक्षस ने उसे छेड़ा, भला–बुरा कहा, उनका युद्ध हुआ और वह जान बचाकर बलराम के पास जाकर छुप गया। बलराम जी को भी राक्षस ने बहुत उकसाया, उनके साथ भी युद्ध हुआ बलराम जी ने देखा कि राक्षस की शक्ति तो बढती ही जा रही है तब उन्होंनें श्रीकृष्ण को जगाया। राक्षस ने उन्हें भी छेड़ा, अपशब्द कहे, उकसाया। तब श्रीकृष्ण ने राक्षस को कहा कि तुम बहुत भले आदमी हो, तुम्हारे जैसे दोस्त के साथ रात अच्छी कटेगी। तब राक्षस ने हंसकर पूछा, में तुम्हारा दोस्त कैसे? श्रीकृष्ण बोले भाई तुम अपना काम छोड़कर मेरा सहयोग करने आये हो, तुम सोच रहे हो मुझे कहीं आलस्य न आ जाए, इसीलिए हंसी–मजाक करने आ गये। राक्षस ने उन्हें बहुत छेड़ने, उकसाने की कोशिश की, लेकिन वो हंसते ही रहे। परिणाम यह हुआ कि राक्षस की ताकत घटने लगी और देखते ही देखते एक छोटे मक्खी जैसे हो गया, उन्होंने उसे पकड़कर अपने पीताम्बर में बांध लिया।

श्रीकृष्णा ने दोनों से कहा कि जानते हो ये राक्षस कौन है ? तब उन्होंने बताया कि इसका नाम है आवेश।

मनुष्य के अंदर भी यह आवेश यानि क्रोध का राक्षस घुस जाता है, मनुष्य उसे जितनी हवा देता है, उतना ही वह दुगुना, तिगुना और चौगुना होता चला जाता है। इस राक्षस की ताकत तभी घटती है, जब इंसान अपने आपको संतुलित रखता है, हर समय मुस्कुराता रहता है, क्रोधरूपी राक्षस की जितनी उपेक्षा करोगे, वह उतना ही घटता जायेगा और जितना बदले की भावना रखोगे, यह बढ़ता चला जायेगा।

कथा सार –: आज छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा हो जाना, घर परिवार, पड़ौस, सभी जगह पर न होने जैसी बातों पर भी हम आवेश और क्रोध में आ जाते हैं। हम सोचते हैं कि सामने वाले से गुस्सा होकर हम उसे सजा दे रहे हैं पर ऐसा नहीं है गुस्से में सब से ज्यादा नुकसान हम अपने स्वयं का ही करते हैं। हमारी गुस्से के दौरान मन की स्थिति अव्यवस्थित होती है, जिसका असर हमारे तन पर होता है जिससे हमारी धड़कन हृदयगति तेज हो जाती है, हमारा रक्तचाप भी बढ़ जाता है और भी बहुत कुछ होता है। और इन सब के कारण हम काफी लंबे समय तक अशान्त भी रहते है। तो गुस्से में हमने ज्यादा नुकसान किसका किया? अतः इस राक्षस की शक्ति को मत बढ़ाओ। अपने गुस्से पर नियंत्रण करने का प्रयास करो।

अनुभूत ग्रामीण नुस्खे

थनेला– रक्तपनर्नवा की जड़ मठा के साथ पीसकर गुनगुना करके बॉधने से स्तनों का फोड़ा बैठ जाता है। अगर पस पड़ जाये तो पकाकर फोड़ देता है।

बालतोड़ – हल्दी और प्याज को बारीक पीसकर कटोरी में थोड़ा तेल डालकर गर्म कर लें। इसे गुनगुना ही बांध लें। दिन में दो बार बॉधने से बालतोड़ पककर ठीक हो जाता है।

कुत्ता काटने पर – कुत्ता काटी जगह हो कैरोसीन से साफ करके लाल मिर्च बारीक पीसकर बॉध दें। केवल 3–4 दिन बॉधने से कुत्ता काटे का विश नश्ट हो जाता है।

मकड़ी विष पर – अमचूर को पानी के साथ बारीक पीसकर संक्रमित जगह पर लेप कर दें। दिन में दो बार तथ तीन दिन लेप करने से मकड़ी का विष नष्ट हो जाता है।

पीलिया – एक तोला अरण्ड के पत्ते लेकर उन्हे दस तोला दूध में पीसकर छान लें और उसमें छः माशा शक्कर मिलाकर दिन में तीन बार पानी से लें। पीलिया रोग शान्त हो जाता है।

मोतियाबिन्द – दो तोला मिश्री तथा एक तोला लाहौरी नमक लेकर बारीक पीसकर मोटे कपड़े से छानकर किसी कॉच की शीशी में भर लें। इसे कॉच या तांबे की सलाई से ऑखों में लगाने से जाला तथा मोतियाबिन्द कट जाता है।

गुहेरी – यदि ऑख में गुहेरी उठ रही हो, तो लौंग पीसकर लगाने से उठती हुई गुहेरी बैठ जाती है या पककर फूट जाती है।

सिरदर्द – चूना, नौसादर और पानी को किसी रंगीन शीशी में भरकर हिलाकर सुंघाने से तीव्र सिरदर्द भी ठीक हो जाता है। जुकाम का सिरदर्द दूर होकर नाक खुल जाती है।

नकसीर – दस ग्राम मुलतानी मिट्टी में रात को आधा किलो पानी डालकर भिगों दें और प्रातःकाल पानी को निथारकर रोगी को पिलाये तो पुराने से पुराना नकसीर रोग भी कुछ दिनों में मिट जाता है।

मुखपाक – छोटी पीपल को बारीक पीसकर शहद मिला लें, तत्पश्चात जीभ पर रगड़े तथा लार को बाहर निकालते रहें। कुछ ही दिनों में मुँह में छाले और मुखपाक ठीक हो जाएगा।

कान में दर्द – टरपेन्टाइन ऑयल 3–4 बूंद कान में डालने से कान की सूजन और दर्द मिट जाता है। एक दो मास के नियमित प्रयोग से बहरापन भी दूर हो जाता है।

पूर्वी राजस्थान

दिनांक 5 व 6 अक्टूबर 2017 को पूर्वी राजस्थान प्रादेशिका माहेश्वरी महिला संगठन एवं माहेश्वरी महिला मंडल, कोटा के द्वारा माहेश्वरी भवन में ''आकर्षण'' शॉपिंग कार्निवल का आयोजन भव्यता के साथ किया गया। जिसके अन्तर्गत कोटा के अतिरिक्त बूंदी, जयपुर और दिल्ली जैसे शहरों से आकर बहनों ने स्टावसीय लगाई। आकर्षण शॉपिंग कार्निवल का उद्घाटन राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती आशा जी माहेश्वरी के द्वारा किया गया एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री माहेश्वरी समाज अध्यक्ष श्री राजेशकृष्ण जी बिड़ला थे। कार्निवल में करीब 35 स्टॉल लगाई गई। घर से कार्य करने वाली माहेश्वरी बहनों को अवसर पर प्लेटफार्म उपलब्ध करवाकर उनमें उत्साह का संचार किया। मेला प्रभारी श्रीमती पुष्पा जी मोदानी को बनाया गया। दिनांक 14 नवम्बर 2017 को बाल दिवस के अवसर पर ग्रामीण क्षेत्र के स्कूल में बच्चों को भोजन के साथ टिफिन का वितरण किया गया। साथ ही बच्चों को माता–पिता का आदर करना, नित्य प्रार्थना करना, सफाई का ध्यान, गुरू का आदर करना जैसी संस्कारी बातें बताई गई।

दक्षिणी राजस्थान में चित्तौड़गढ़ जिले में 50 हजार लोगों ने मनाया वंदे मातरम् एक साथ। राष्ट्रीय एकता के महाकुम्भ में वन्देमातरम् स्टेडियम में सभी स्कूलों के बच्चों एवं शिक्षिकों एंव आम जनता के द्वारा सामूहिक वन्देमातरम का गान हुआ। जिला माहेश्वरी महिला मंडल की बहनों द्वारा इस कुम्भ में विशेष योगदान रहा। एक दिन पहले बच्चों के प्रसाद की पैकिंग मंउल की सदस्यों ने वोलेंटियर के रूप में अभूतपूर्व योगदान दिया व स्कूली बच्चों को बैठा कर जलपान व पानी, टोपियां बांटी एवम् मंडल की ही लीला आगाल द्वारा मंच संचालन की कमान बहुत सराहनीय तरीके से संभाली गयी।

माहेश्वरी महिला मंडल कोटा के द्वारा दिसंबर माह की मीटिंग के अंतर्गत माहेश्वरी भवन में आयुर्वेद कुकिंग पर कायक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती उषा जी भरदावा ने बहनों को बिना तेल के सब्जियां बनाना, स्वास्थ्य के लिए लाभदायक भोजन से जुड़ी अनेक बातें बताई। कार्यक्रम के अन्तर्गत सूरत से पधारी श्रीमती विमला जी साबू के द्वारा ''परम्परा निभाये परिवर्तन के साथ'' विषय पर प्रकाश डाला गया। महिला मंडल सचिव ऋतु मून्दडा एवं महिला मंडल अध्यक्ष अरूणा जी मून्दड़ा ने बताया कि विमला दीदी ने प्रश्नोत्तरी के माध्यम से बहनों की समस्याएं सुनी एवं उनका निराकरण भी बताया। सभी बहनों द्वारा कार्यक्रम को बहुत सराहनीय बताया गया।

ऋतु मूंदड़ा, सचिव

नवरात्रि पर्व मनाया भव्य गरबा रास उत्सव के साथ

जोधपुर शहर माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा गरबा

रास का भव्य आयोजन सुशीला बजाज की अध्यक्षता में बसंत गार्डन में किया गया। डॉ. फूलकौर मूंदड़ा एवं कमल जी मूंदड़ा के सानिध्य में हुए इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वीणा जी लाहोटी आई.ए.एस. अफसर तथा विशिष्ट अतिथ सुरेश जी राठी, जे.एम. बूब एवं राधाकृष्ण जी सोनी रहे। सचिव गीता सोनी ने बताया कि इस अवसर पर करीबन 800 लोग मौजूद थे तथा करीबन 200 महिलाओं ने गरबा पोशाकें पहनकर डांडिया की प्रस्तुति दी। डांडिया के तीन राउंड हुए, पहला महिलाओं का फिर बच्चों का और अंत में कपल राउंड हुआ। कोषाध्यक्ष सुनीता डागा ने बेस्ट गरबा डांस, बेस्ट ड्रेस, बेस्ट कपल आदि विभिन्न पुरूस्कार वितरित किए। उपाध्यक्ष बबीता चांडक ने बताया कि नेहा राठी, द्वारा भव्य आतिशबाजी एंव रेणु चांडक द्वारा ढ़ेरों ईनामों की बौछार की गई। संयोजिका प्रभा लोहिया एवं सह संयोजिका श्वेता राठी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग किया। कृषि मंत्री गजेन्द्र जी शेखावत एवं महामंत्री संदीप जी काबरा ने उपस्थिति दर्ज करके कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। शिवकन्या धूत, सुमन, गांधी, संजू सोनी, गीता राठी, भावना बूब, सरोज मूंदडा, संगीता सोनी, पवित्रा राठी, इन बहनों का पूर्ण सहयोग रहा। लकी ड्रा तथा स्वादिष्ट व्यंजनों का मजा लेते हुए कार्यक्रम का समापन हुआ।

जोधपुर दीपावली स्नेह मिलन पूर्वी क्षेत्र द्वारा दीपावली स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। मण्डल की करीब 90–100 बहनों ने भाग लिया। जोधपुर स्थित राधा रानी महादेव मन्दिर में स्नेह मिलन का भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर बबीता चांडक, गीता राठी, गीता सोनी, मंजू गट्टानी, ललिता धूत, सुशीला बजाज, सुनीता डागा द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी गई एवं भगवान के भोग के भी भजन प्रस्तुत किये। ''मारवाड़ की शान'' देसी बाजरे का खीचड़ा, बाजरे की रोटी, लाप्सी, फली की सब्जी, पापड़ का भगवान को भोग लगाकर प्रसाद के रूप से सभी ने ग्रहण किया। सभी महिलाओं ने दीपावली की शुभकामनाएं एक दूसरे को दी और प्रसाद का भरपूर लुफ्त उठाया एवं खूब आनंद लेते हुए स्नेह मिलन मनाया। इस अवसर पर जिला अध्यक्षा प्रभाजी वैद्य, शिवकन्या जी धूत भी उपस्थित थी। ममता जी मूंदड़ा, छाया जी राठी, पुष्पा सोनी, सुमन गांधी, रेणु चांडक आदि बहनों की उपस्थिति ने कार्यक्रम में चार चांद लगाए। जिले में हुए अन्नकूट महोत्सव एवं तुलसी विवाह में भी पूर्वी क्षेत्र की बहनों द्वारा शानदार नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

मंडल द्वारा ''गोपाष्टमी महोत्सव'' दिनांक 28.10.17 शनिवार को गोपाष्टमी उत्सव मनाया गया। मण्डल अध्यक्षा सुशीला बजाज ने बताया कि इस अवसर पर मण्डल की करीब 70–80 महिलाओं ने सामूहिक गौ पूजन किया। जोधपुर शहर स्थित चांदपोल में राधा रानी, पंथेश्वर महादेव गौशाला जिसमें सिर्फ एक्सीडेंट गायें जो सड़कों पर अवैध रहती हैं, इस गौशाला में ले जाया जाता है एवं इनकी उचित देखभाल की जाती है। मण्डल की बहनों द्वारा इस गौशाला में सामूहिक पूजन किया साथ ही गायों के लिए लाप्सी, गुड़, चारा की गाड़ी एंव 4100 रूपये की राशि मण्डल की बहनों द्वारा एकत्रित करके गौशाला में दान की गई। यहां पर स्थित पक्षीधाम में भी कबूतरों के लिए ज्वार भेंट की। इस शुभ अवसर पर जोधपुर के संत श्री मनीष भाई ओझा के द्वारा महिलाओं को गौ पूजन का संकल्प दिलाया गया एवं उनके द्वारा सत्संग, भजनों का भी लाभ मण्डल की बहनों को मिला। गीता सोनी ने बताया कि सभी बहनों ने खूब आनंद लिया। बबीता चांडक, सुनीता डागा, गीता राठी, पुष्पा सोनी, सरोज मूंदड़ा, संगीता विड़ला आदि बहनों का कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग रहा।

सुशीला बजाज

पूर्वी मध्यप्रदेश माहे. महिला संगठन

अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन के कोलकाता में आयोजित उर्जिता में मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्रीय माहेश्वरी महिला संगठन की 40 सदसयों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की, कोलकता में आयोजित नारी सशक्तिकरण पर कव्वाली प्रतियोगिता एवं लोकनृत्य प्रतियोगिता में पूर्वी मध्यप्रदेश अपनी टीम लेकर गया था। कव्वाली की टीम बरेली से व लोकनृत्य टीम विदिशा से लेकर गए थे, दोनों ही टीम की बहुओं ने प्रथम बार अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लिया था, कव्वाली की टीम को अखिल भारतीय में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। लोकनृत्य प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरूस्कार प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय अध्यक्ष कल्पना जी ने कव्वाली टीम की प्रशंसा की तथा बताया कि प्रतिभागियों को आगे लाने के लिए मंच चाहिए। इसी तरह खेल महोत्सव उर्जिता में बास्केट बाल, चैस, कैरम में प्रदेश के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कैरम में हमारे प्रदेश के कटनी की सहसचिव सविता जी की बेटी अंकिता विजय रही। आंचलिक स्तर पर भी चैस व क्रिकेट टीम विनर रही। हमारी बॉस्केट बाल व चैस टीम का प्रदर्शन भी अच्छा रहा। सभी खिलाड़ी पिपरिया के थे। सभी को प्रदेश की ओर से हार्दिक बधाई दी गई।

पूर्वी मध्यप्रदेश की मेजवानी एवं पिपरिया महिला मंडल के तत्वाधान में प्रातः 9 बजे महेश वंदना और

दीप प्रज्वलन के साथ, मध्यांचल की उपाध्यक्षा श्रीमती ज्योति जी राठी एंव खेल प्रभारी नम्रता जी बियानी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। केरम व बॉस्केट बॉल प्रतियोगिता का आयोजन पिपरिया में मध्यांचल उपाध्यक्ष ज्योति जी राठी रायपुर, एवं उर्जिता खेल की प्रभारी नम्रता जी बियानी के मुख्य आतिथ्य में किया गया। दूसरा सत्र दोपहर 3:30 पर आरम्भ हुआ। उसमें ज्योति जी ने अपने उद्‌बोधन में संस्कार व संस्कृति को जिन्दा रखना हम सबका दायित्व है हमें अपनी संस्कृति का भान होना चाहिए, पर जोर दिया गया। इस दौरान आपने सास बहू के रिश्तों के साथ ही घर, परिवार व समाज ने काम करने वालो की प्रशंसा की। उर्जिता खेलों की प्रभारी नम्रता जी बियानी ने पांच विषयों पर अपनी बात रखते हुए खिलाड़ियों की सराहना की। अतिथियों का परिचय श्रीमती मंजू झंवर एवं पदमा राठी ने दिया। इस अवसर पर प्रादेशिक सचिव अनीता जी जांवधिया, सहसचिव राजश्री जी राठी, शोभा जी भट्टड़, जिला सचिव आशा जी मालपानी, वीना जी मूंदड़ा, सेवा मंडल के सचिव संजय जी घुरका, बालकिशन जी टावरी सहित संगठन के पदाधिकारी, खेल प्रशिक्षक उपस्थित थे। नागपुर, खामगांव, इंदौर, पिपरिया तथा पूरे मध्यांचल से प्रतियोगी आये थे। मध्यांचल के अंतर्गत पूर्वी मध्यप्रदेश, पश्चिमी मध्यप्रदेश, गुजरात, विर्दभ, छत्तीसगढ़ के 28 खिलाड़ी अखिल भारतीय स्तर पर जाएंगे। जिसमें सर्वाधिक खिलाड़ी पिपरिया से है। इस उपलब्धि पर मध्यांचल सहित प्रदेश, जिला व सेवा मंडल के पदाधिकारियों ने खिलाड़ियों को बधाइयां दी। ज्योति जी एवं नम्रता जी का सम्मान पिपरिया महिला परिषद द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रीति भूतड़ा ने किया। आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रादेशिक संचारिका संयोजिका
उर्मिला सादानी, हरदा (म.प्र.)

''समर्पिता'' महाराष्ट्र प्रदेश सप्तम सत्र की प्रथम कार्यकारिणी बैठक 2017

महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की प्रथम कार्यकारिणी बैठक समर्पिता 2017 अहमदनगर जिला संगमनेर न्यू माहेश्वरी महिला मंडल के आतिथ्य में दिनांक 28, 29 अक्टूबर 2017 को 250

बहनों की उपस्थिति में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। उद्‌घाटन समारोह में उदघाटनकर्ता सौ.लताजी लाहोटी एवं सौ.मंदाजी काबरा, सौ. शैलाजी कलंत्री, श्रीमती सुवर्णाजी मालपानी, सौ. ज्योत्सनाजी लाहोटी, सौ. अनुसया मालू एवं डॉ. श्री संजयजी मालपानी ने भगवान महेश को माल्यापर्ण कर दीप प्रज्वलन किया और बैठक का शुभारंभ आदरणीय लताजी लाहोटी ने कराया। अहमदनगर जिला संगमनेर की बहनों ने पौधा देकर सभी का स्वागत किया। सोनिया मालपानी ने महेश वंदना नृत्य द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी उपस्थित मान्यवरों ने सभी आयोजनों की सराहना करते हुए सभागृह में सरपंच श्री मदनलाल जी करवा, श्री माहेश्वरी सभा अध्यक्ष विट्‌ठलदास जी आसावा, सचिव अजय जी जाजू, राजस्थानी युवा संगठन अध्यक्ष मनीष जी मालपानी, कैलाश जी सोमाणी, मनोज जी मनीयार उपस्थित थे। अहमदनगर जिला अध्यक्ष सौ. मंजूश्री धूत ने शाब्दिक स्वागत किया। संगठन को शुभकामनाएं देते हुए ''जीवन अनमोल है, इसे सार्थक कैसे बनाये?'' यह बताया गया। महाराष्ट्र प्रदेश सुकीर्ति समिति संयोजिका सौ. रचनाजी मालपानी ने खेल महोत्सव के बारे में बताया। सौ. लताजी लाहोटी ने सभी बहनों को बधाई दी तथा अपने समाज की कम हो रही जनसंख्या पर चिंता व्यक्त की। दक्षिणांचल उपाध्यक्षा सौ. शैलाजी कलंत्री ने खेल महोत्सव ''उर्जिता'' के कोलकाता में होने वाले महोत्सव के

बारे में बताया। ललिता जी मालपानी ने खेल महोत्सव की शुरूआत की तथा सभी बहनों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

छत्तीसगढ़ माहेश्वरी महिला संगठन

प्रदेश सुरभि समिति के अंतर्गत माहेश्वरी महिला समिति गोपाल मंदिर द्वारा दिनांक 16.11.2017 गुरूवार को बाल दिवस के उपलक्ष्य में श्री सांई श्रद्धा इंग्लिश स्कूल कटोरा तालाब में नर्सरी, पी.पी.– 1, पी.पी.–2 के बच्चों से कलरिंग प्रतियोगिता करवाई गई। बच्चों को संस्कार एवं स्वच्छता की बातें श्रीमती राठी द्वारा समझाई गई साथ ही सामान्य ज्ञान के सरल प्रश्न बच्चों से पूछे गए। बच्चों ने बड़े उत्साह से प्रश्नों का जबाब दिया। इस अवसर पर बच्चों से गमलों में फूलों के एवं शो के सुन्दर पौधे लगवाये गये एवं पर्यावरण का महत्व समझाया गया। प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को पुरूस्कार देकर उनका हौसला बढ़ाया गया। सभी बच्चों में कलर, बिस्कुट एवं चॉकलेट वितरित किये गए। कार्यक्रम में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (मध्यांचल) श्रीमती ज्योति जी राठी उपस्थित थीं। छत्तीसगढ़ प्रदेश के प्रकल्प प्रमुख श्रीमती प्रतिभा जी नत्थानी, रायपुर जिला की अध्यक्षा श्रीमती सरला जी चांडक उपस्थित थीं। माहेश्वरी महिला समिति की कार्यकारिणी सदस्यों का भी पूरा सहयोग रहा।

सुरभि समिति संयोजिका
श्रीमती रमा मल्ल रायपुर

''दुर्ग, डोंगरगढ़ तथा बालोद में हुआ टॉक शो का आयोजन''

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वाधान में आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन डोंगरगढ़ दुर्ग एवं बालोद में 5, 6, 7 नबंवर को आयोजित किया गया। श्रीमती विमला जी साबू, श्रीमती ज्योति जी राठी, श्रीमती मंगल जी मरदा, श्रीमती आशा जी डोंडिया, श्रीमती शशि जी गट्टानी, श्रीमती उषाजी मोहंता, श्रीमती गीता जी डागा, श्रीमती सरस्वती जी लोहिया, श्रीमती शीला जी गांधी उपस्थित थे। इसके अलावा विट्ठल जी भूतड़ा, श्री मोहनजी राठी, अनिल जी राठी, श्रीमती मधुजी सोमानी, श्रीमती निधि झंवर आदि की उपस्थिति में कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

डोंगरगढ़ में निशा तापड़िया द्वारा स्वागत भाषण के बाद श्रीमती लता भैया और श्रीमती उषा दम्माणी का सम्मान किया गया। मंच संचालन श्रीमती ममता दमानी एवं श्रीमती पूजा कोठारी द्वारा किया गया। श्रीमती ज्योतिजी राठी द्वारा ''बदलता परिवेश, जिम्मेदार कौन ? टॉपिक पर सटीक बात बताई कि दुनिया हमारी मुट्ठी में हैं परंतु यह रेत की धार की

तरह फिसलती जा रही है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती विमला जी साबू ने ''भावनाओं के झोंकों के संग, रिश्तों की सुगंध'' विषय पर ताश के पत्तों के खेल का उदाहरण देकर बताया कि गलतियों को स्वीकार करें, संवाद बनाये रखे, दूसरों की प्रशंसा करें। श्रीमती मंगल जी मरदा ने संख्या काल पर अपने बहुत सुंदर विचार रखे और कहा कि सायंकाल अपनी सोच को परिवर्तित करें वृद्वाश्रम में माता–पिता को न छोड़ें, संस्कारों को जीवित रखने के लिए अपने आप को बदले नहीं क्योंकि आप जो करेंगे आने वाली पीढ़ी वही सीखेगी। श्रीमती अनुराधा राठी ने आभार व्यक्त किया तथा प्रचार प्रसार मंत्री श्रीमती रूपा मूंदड़ा ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ सभी का आभार प्रकट किया।

दुर्ग में 5 नबंवर को टॉक शो का आयोजन रखा गया जिसमें महेश वंदना के बाद प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती आशा जी डोडिया ने सदा जागरूक रहने और संगठन को साथ लेकर चलने की बात कही। श्रीमती विमला जी साबू का टाक शो दांपत्य जीवन पर आयोजित हुआ जिसमें छोटे–छोटे टिप्स दिए गए जिसे हम अपने जीवन में उतार कर दांपत्य जीवन को सुखकारी बना सकते हैं। श्रीमती साबू ने कहा हर बात को प्रेम से करने से कई काम आसान हो जाते है और पति पत्नी के बीच संवाद को बनाए रखे ना कि व्हाट्सप पर ज्यादा समय व्यतीत करें। इससे हमारा जीवन गतिशील बनेगा और जीवन जीने की इच्छा प्रबल होगी।

श्री अनिलजी राठी का सकारात्मक सोच पर टॉक शो आयोजित हुआ जिसमें अनिल जी ने जीवन के अनेक पहलुओं पर अपने विचार रखे जिसे महिलाओं ने एकाग्रता के साथ सुना। श्री अनिल जी ने कहा कि ऑखों का अंधा चलेगा पर विचारों का अंधा नहीं इसलिए वर्तमान में जीते हुए अपना हर पल जिए, अपनी हर बात को सोचने का तरीका बदलें, प्लानिंग के साथ कार्य करें। उन्होंने आगे कहा कि जो मन का हो वह अच्छा, जो मन का न हो तो उससे भी अच्छा। तालियों की गड़गड़ाहट से सेशन पूरा हुआ।

भोजनावकाश के बाद द्वितीय चरण में श्रीमती मंगल जी मरदा का ''चलो उत्कर्ष की ओर'' विषय पर सुदंर टॉक शो आयोजित हुआ श्रीमती मरदा ने कहा कि अब समय है हमें हर जगह अपडेट होना है। खाली व्हाट्सअप पर मैसेज भेज कर अपडेट होना अपडेट नहीं कहा जाएगा आप उसके लिए अच्छी किताबें पढ़े, न्यूजपेपर पढ़े और नए नए कार्य को क्रिएटविटी के साथ सोच कर आगे कार्य करें। बच्चों को न बोलने की आदत डालें और लड़कियों को छोटे–छोटे कार्य करवा कर उन्हें किचन से जुड़ना सिखाएं। प्रदेश अध्यक्ष द्वारा समय–समय पर हुई प्रतियोगिताओं का पुरूस्कार वितरण किया गया। अंजलि लाखोटिया द्वारा मंच का संचालन किया गया तथा निधिजी झंवर ने आभार व्यक्त किया तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। बालोद माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा टॉक शो का आयोजित किया गया जिसमें 60 से ज्यादा बहनें उपस्थित थीं।

प्रचार प्रसार मंत्री
सौ. रूपा मूंदड़ा

मुंबई प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

मुंबई प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा सुचिता समिति के अंतर्गत स्वामी श्री केशवाचार्य जी के सानिध्य में धर्नुमास के उपलक्ष्य में गोदम्बा उत्सव व श्री रामानुज सहस्त्रवादी महोत्सव 26 दिसम्बर 2017 को माहेश्वरी भवन अंधेरी में रामानुज जयंती के रूप में मनाया। श्री रामानुज जी के जीवन वृतांत को नृत्य नाटिका के रूप में समाज के कलाकारों ने बहुत सुदंर तरीके से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सुचिता समिति प्रभारी श्रीमती कलावती जाजू, राष्ट्रीय अध्यक्ष

पुर्नवसन संस्था द्वारा विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की सौ. उषा करवा, सरिता सोनी, आशा लड्ढ़ा एवं भारती राठी, की कृतज्ञता जताने हेतु श्री गोविंद कसाट (सुप्रसिद्ध समाक्षेती) एवं महासचिव शकील नायक द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

श्रीमती कल्पना जी गगरानी, पूर्वाध्यक्ष श्रीमती सुशीला जी काबरा, राष्ट्रीय संरक्षिका श्रीमती रत्नी देवी काबरा, कार्यालय मंत्री श्रीमती सुषमा जी मून्दडा, पश्चिमांचल संयुक्त मंत्री श्रीमती डॉ. फूलकुंवर जी मून्दडा की उपस्थिति ने हमें प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर प्रादेशिक संगठन की सौ. डॉ. सुधा राठी (यवतमाल), सौ. डॉ. तारा राठी (अकोला), सौ. ज्योति बाहेती (अकोला) सौ. आशा लड्ढ़ा (अमरावती) सौ. सरिता सोनी (अमरावती), सौ. ज्योत्सना तपाड़िया (अकोला) सौ. संध्या केला, सौ. शशि मूंदड़ा अमरावती, सौ. कमला मोहता, सौ. सुषमा बंग, सौ. विद्या लद्धड़ (नागपुर) सौ. निशा राठी, गीता भूतड़ा (यवतमाल) आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन व आभार भारती राठी ने माना।

श्यामा हेड़ा
दक्षिणांचल सुचिता समिति राष्ट्रीय संयोजिका

विदर्भ में चार दिवसीय अंधजनों के लिए शतरंज का भव्य आयोजन

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के सहयोग से भारतीय अधंजन विकास एंव पुर्नवसन संस्था द्वारा 4 दिवसीय पश्चिम विभागीय शतरंज स्पर्धा का आयोजन ''दोषीवाड़ी'' अमरावती में किया गया। प्रतियोगिता में संपूर्ण भारत से 250 बहनों ने भाग लिया। प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा सौ. उषा करवा के आव्हान पर सभी कार्यकर्ता बहनों ने इसमें अपना तन मन धन से सहयोग प्रदान कर कार्यक्रम को सफल बनाया। विदर्भ प्रादेशिक संगठन द्वारा आवास, निवास एवं भोजन की व्यवस्था की गई।

द्वितीय कार्यसमिति बैठक ''उदगति''

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में बरेली महिला मंडल द्वारा प्रदेश की द्वितीय कार्यसमिति बैठक का आयोजन दिनांक 19 नंबवर 2017 दिन रविवार को गीता पैलेस मारवाडी गंज बरेली में किया गया। दीप प्रज्वलन व महेश वदंना के पश्चात स्वागत गान एवं संरक्षिका कुमकुम जी काबरा के उद्बोधन से कार्यक्रम का शुभांरभ हुआ। दीप्ति, हंसुला व अनुषी द्वारा सुदंर नृत्य प्रस्तुति दी गई।

सर्वप्रथम सचिव मंजू हरकुट द्वारा मीरापुर में आयोजित बैठक आकर्षण की रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई गई। उत्तरांचल उपाध्यक्ष कांताजी गगरानी द्वारा आगामी खेल उत्सव उर्जिता के विषय में बहनों द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों का उत्तर दिया गया। अध्यक्ष विनीता जी राठी द्वारा ब्रज सुर्दशन यात्रा में सहयोग देने वाली सभी बहनों को धन्यवाद दिया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था, सभी प्रादेशिक समिति सह संयोजिकाओं द्वारा स्वंय अपनी समिति में होने वाले व हो चुके कार्यों का विवरण देना। सभी ने इस कार्य को भली भांति सम्पन्न किया। कुछ संयोजिकाएँ अनुपस्थित होने के कारण इस अवसर की उपलब्धता को सार्थक नहीं बना सकी।

सुदर्शन मंडल यात्रा में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाली एवं पूर्व में आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं व प्रतिभागियों को प्रदेश द्वारा उपहार देकर सम्मानित किया गया। कासगंज की बहन प्रतिभा जी रेन्दर ने अखिल भारतीय

माहेश्वरी महिला ट्रस्ट की ट्रस्टी बनने का गौरव प्राप्त किया। 14 शहरों की करीब 50 बहनों ने कार्यक्रम में प्रतिभागिता दर्ज कराई। अनेक शहरों की अध्यक्षाओं द्वारा अपने शहर में पिछले 6 महीने में हुए कार्यक्रमों का लिखित विवरण सचिव मंजू हरकुट को दिया।

उत्तरांचल उपाध्यक्ष कांता जी गगरानी, अध्यक्ष विनीता जी राठी, कोषाध्यक्ष मंजू जी चांडक, बरेली संरक्षिका सुशीला जी साबू एंव कुमकुम जी काबरा आदि ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

जिलाध्यक्ष मंजू जी वियाणी, नगर अध्यक्ष प्रभा जी मूंदड़ा, सचिव शशि जी साबू, सहसचिव ललिता जी परवाल व रत्ना जी आदि के प्रयासों से ही इस बैठक को मूर्त रूप मिल पाया।

आप सभी के प्रयासों के लिये प्रदेश संगठन आपको धन्यवाद करता है एवं भविष्य में ऐसे ही सहयोग की आशा व अपेक्षा करता है। अंत में सुंदर, सुव्यवस्थित व स्नेहात्मक बैठक के आयोजन के लिए प्रदेश सचिव द्वारा बरेली महिला मंडल को धन्यवाद दिया गया।

मंजू हरकुट

कुकिंग कॉम्पटीशन

संगीनी संगठन ने जायडस हॉस्पिटल से जुड कर दिनांक 22.11.2017 को ''Breast Cancer Awareness'' कार्यक्रम का आयोजन किया। साथ ही

संगीनी ने कुकिंग कॉम्पटीशन का भी आयोजन रखा। कई सदस्य बहनों ने भाग लिया। विजेता को ईनाम दिया गया। इस कार्यक्रम में और भी संगठन उपस्थित थे। लगभग 1200 बहनें उपस्थित थीं। साथ ही ''Housi Game'' एवं अल्पाहार भी रखा गया, पधाई हुई सभी बहनों को ''Sour Gift'' दिए गए। कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ पूरा हुआ।

महाराष्ट्र माहेश्वरी महिला संगठन

महाराष्ट्र माहेश्वरी महिला संगठन थाने माहेश्वरी

महिला समिति के कपड़ा बैंक उपक्रम के तहत 12 नवम्बर कुणीगॉव में (भिवंडी के आदिवासी इलाके) में जाकर कपड़े खिलौने जूते का वितरण किया। साथ में करीब करीब 600 लोगों को खाना खिलाया। उसके बाद आंबा माता वाड़ा में जाकर 40 बच्चों को भी खाना खिलाया और करीब महीने भर का राशन दिया। उसमें दाल, चावल, शक्कर, गुड़, तेल आदि का वितरण किया। वहां के गौशाला में जा कर गौ सेवा भी की।

आज 16 नवम्बर को जलगांव जिला की ओर से महात्मा गांधी उद्यान में मूक बाधिर विद्यालय के पहली से दसवीं कक्षा के छात्रों की ट्रिप आयोजित की। बच्चों को विविध प्रकार के गेम्स खिलाए जैसे दोरी उडना, बैलेंसिंग, बेडूक उड़ना, रनिंग, रांउड ग्रुप बनाना आदि। बच्चों का आंनद व उत्साह देखने लायक था। बच्चों को नोटबुक तथा प्राइज भी दिए गए। अंत में नाश्ता देकर बालदिवस मनाया गया। कार्यक्रम की प्रायोजक ताराबाई तापड़िया, सुमति नवाल थी। गेम्स खिलाने में रंजना भंडारे ने मदद की। बहुत सारी सदस्याएं भी उपस्थित रही।

रत्नगिरी जिले के चिपलून तथा दापोली तहसीलों में सुरभि समिति के अंतर्गत 14 नवम्बर के दिल बाल दिवस बहुत ही उत्साह से मनाया गया। चिपलून के एस.पी.एम. नर्सरी स्कूल में पंडित नेहरू जी की प्रतिभ्मा को पुष्पहार अर्पण करके कार्यक्रम की शुरूआत हुई। फिर सभी बच्चों को ड्राइंग मटेरियल दिया गया और दिए हुए चित्र में रंग भरने की स्पर्धा की गई। विजेता बच्चों को गिफ्ट देकर सराहा गया। बाकी सभी बच्चों को बिस्किट और बलून दिया गया।

दापोली के किड्स वर्ल्ड प्ले स्कूल में भी

हमारी बहनों ने बच्चों को वलून, चॉकलेट्स और गिफ्ट दिया। बच्चों के साथ 1 मिनिट के गेम्स भी खेले गए। बच्चों ने बहुत आनंद लिया तथा बच्चों के साथ बच्चा बनने का आनंद सभी बहनों ने उठाया।

थाना जिला डोंबिवली क्षेत्रीय महिला मंडल ने बाल दिवस के अवसर पर शांति नगर स्कूल के बच्चों के मनोरंजन के लिए जादू का शो रखा। साथ ही बच्चों को केक चॉकलेट्स तथा गुब्बारे वितरित किए। स्कूल के 300 बच्चों ने भरपूर आनंद लिया। उनके चेहरे की खुशी को देखकर एक अलग ही आत्मसंतुष्टि हुई।

शाखा गुना द्वारा शारिरिक व मानसिक रूप से अक्षम बच्चों के दिव्यांग छात्रावास में बाल दिवस मनाया। इस अवसर पर बच्चों को नाश्ता करवाया, उनके साथ समय व्यतीत किया तथा मनोरंजक गेम्स जैसे सांप–सीढ़ी, लूडो, शतरंज, बैट–बॉल, बैड मिन्टन, भी उनको भेंट स्वरूप दिया।

नेपाल प्रान्त

माहेश्वरी महिला संगठन विराटनगर सुरभि समिति के अंतर्गत बाल दिवस 18.11.2017 शनिवार को डीपीएस मोन्टीसेरी स्कूल में बच्चों के साथ मनाया गया। बच्चों के लिए निबंध प्रतियोगिता (विषय– स्वास्थ्य ही महत्वपूर्ण है) चित्रकला प्रतियोगिता (विषय– पर्यावरण) क्विज प्रतियोगिता (विषय– धर्म और इतिहास) भी करवाई गयी और दो गेम्स भी खिलाए गए। इन सब में 70 बच्चों की सहभागिता थी। फर्स्ट, सेंकड, और थर्ड इनाम का वितरण किया गया और सभी के लिए जूस और नाश्ता रखा गया। इसी के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

अध्यक्ष	सचिव
श्रीमती उमा राठी	श्रीमती आशा अटल

दिल्ली प्रदेश माहेश्वरी महिला मंडल

अध्यक्ष किरण जी लड्ढा तथा सचिव श्यामा जी

बांगडिया द्वारा कोलकता उर्जिता कार्यक्रम में प्रतियोगी बहनों को प्रतियोगिता के लिए तैयार किया गया। दिल्ली माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष डॉ.एस. एन. चांडक जी ने 1,00,000 रूपये तथा दिल्ली प्रदेश से उत्तरांचल राष्ट्रीय सह सचिव शर्मिला जी राठी 51000 व पश्चिमी क्षेत्र से दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष आशा जी रांदेर ने 50,000 रूपये का कोलकता में गेस्ट बनकर योगदान किया। संगठन में हर माह नए सदस्यों का विस्तार हुआ। सुश्रिता कोलकता में आयोजित मिटेक्सपो औद्योगिक मेले में दिल्ली प्रदेश द्वारा 3 स्टॉल के लिए बहनों को तैयार किया गया। जिसमें प्रदेश थीम की स्टॉल को साजसज्जा में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र ने मोबाईल एप की वर्कशॉप 22 दिसम्बर को रखी जो कि बहुत ही ज्ञानवर्धक रही। 35 बहनों की उपस्थिति में मोबाईल एप की वर्कशॉप का नेतृत्व राधिका लड्ढा ने किया। उनकी सहयोगी जसिका एवं अदिति बनी तथा अंजू श्रीवास्तव ने मोबाइल फोन से निकलने वाली किरणों से हानि एवं उससे बचाव के उपाए बताए। अच्छे सेनेटरी नैपकिन के उपयोग के साथ उसके फायदे व अच्छे खराब में अंतर करना सिखाया। इसके अलावा मोबाईल एप के जरिए नेवीगेशन, कोर्लाज, विडियो, पीडीएफ फाईल, कॉपी पेस्ट, मेल तथा और भी बहुत कुछ सीखने को मिला। संवरना में बायोडाटा की फाइल तैयार करके कोलकाता में आयोजित प्रतियोगिता में शामिल किया जिसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता में द्वितीय पुरूस्कार मिला। सुरभि में प्रदेश के सभी क्षेत्रों से 41 सदस्यों ने कोलकता पहुंच कर आयोजित कार्यक्रम उर्जिता में अपनी भागीदारी

निभाई। सुलेखा समिति के अंतर्गत प्रादेशिक स्तर पर नारी सशक्तिकरण राष्ट्रीय चतुर्थ लेखन प्रतियोगिता नारी सशक्तिकरण पारिवारिक या सामाजिक हित में पक्ष या विपक्ष प्रतियोगिता के परिणाम घोशित किए गए व राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश के उत्तरी क्षेत्र की बेटी को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ जो कि प्रदेश के लिए गर्व की बात है। संचारिका समिति के अंतर्गत फेसबुक व व्हाट्सएप पर दिल्ली प्रदेश की रिर्पोटस् बराबर अपलोड की जाती है। सौश्ठा प्रदेश के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र ने 24 दिसम्बर को नेत्र जांच शिविर लगाया जिसमें करीब 240 रोगियों को रजिस्ट्रेशन किया गया। जरूरतमंद रोगियों को निःशुल्क चश्मा व दवाईयां वितरित की गई। सभी के सहयोग व सेवार्थ भाव से प्रसाद व भंडारे का वितरण किया गया। सुकीर्ति दिल्ली प्रदेश से उर्वशी जी साबू द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रम उर्जिता में नारी सशक्तिकरण पर 4 अलग अलग प्रदेशों से आयी बहनों के साथ अपनी टीम बनाकर चर्चा परिचर्चा संचारित किया। 17 दिसम्बर को 2 घण्टे का यह टॉक शो बहनों के लिए अत्यंत ही विचारणीय था और ऐसी चर्चाएं समय पर होती रहनी चाहिए। दर्शक बहनों का ऐसा सुझाव था। उत्तरांचल के दिल्ली प्रदेश ने एक खिलाड़ी बैडमिंटन व 10 खिलाड़ियों की टीम किक्रेट मैच के लिए तैयार किये। क्रिकेट टीम ने कोलकता में अपने शानदार प्रदर्शन से 2 मैच जीतने में कामयाबी हासिल की। राष्ट्रीय प्रतियोगिता कव्वाली व लोकनृत्य को दिल्ली प्रदेश से गई बहनों ने बहुत ही खूबसूरती से निभाया। सभी का प्रर्दशन प्रांगण में उपस्थित दर्शकों के लिए सराहनीय था। महिला सेवा ट्रस्ट दिल्ली प्रदेश से राष्ट्रीय सुलेखा प्रभारी मंजू जी मानधना ने 51,000 रू की राशि देकर महिला ट्रस्ट में संरक्षक के रूप में अपनी सेवा दी। कोलकाता में आयोजित प्रथम कार्यकारिणी बैठक में सभी प्रदेशों द्वारा पूरे एक वर्ष की रिर्पोटिंग प्रतियोगिता में दिल्ली प्रदेश को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। दिल्ली प्रदेश के टीम मैंनेजर को बेस्ट मैंनेजर अवार्ड मिला। इस तरह दिसम्बर माह में बहुत सी समितियों के अंतर्गत विशिष्ट कार्यक्रम किए गए।

दिल्ली प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र की अध्यक्ष सरोज जी दम्माणी व सचिव संगीता जी कासट के नेतृत्व में 21 नवम्बर को दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में निःस्वार्थ भाव से 500 रोगियों व उनके परिजनों को भोजन करवाकर बहनों ने आत्मिक व मानसिक शांति की अनुभूति की। स्वच्छ बर्तन में गरमा गरम खाना तथा साथ में छाछ, डिस्पोजेबल डस्टबिन सब कुछ व्यवस्थित था। अनुशासन लाईन में खड़े 500 लोगों का धैर्य जिनमें कुछ बीमार भी थे, वह जाने वाली बहनों को बहुत कुछ शिक्षा दे गया। उन्हें देखकर मन अंदर तक भीग गया। इस सेवा कार्य से जो बहनें जुड़ी उनके लिए धन्यवाद शब्द भी छोटा है।

अध्यक्ष	सचिव
किरण लड्ढा	श्यामा बांगडिया

पश्चिमी उ.प्र. माहेश्वरी महिला मंडल

पश्चिमी उ.प्र. के अंतर्गत बरेली में माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गिरिराज पूजन एवं भव्य अन्नकूट का आयोजन किया गया। साथ में लड्डू गोपाल पोस्टर सजाओ प्रतियोगिता रखी गयी थी सभी ने बहुत सुन्दर डेकोरेशन किया था जिसमें प्रथम स्थान प्रिया राठी तथा द्वितीय स्थान अवनि राठी का रहा।

बाल दिवस के उपलक्ष्य में महिला मंडल द्वारा बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बड़े बच्चों का विषय था कि कैसे प्रदूषण को रोकें ? तथा छोटे बच्चों के लिए दीया बनाओ। सभी ने बड़े उत्साह से बहुत सुन्दर चित्रण किया।

आर्णी माहेश्वरी महिला मंडल को केन्द्रीय मंत्री

बाल दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रदेशों में संम्पन्न हुए कार्यक्रम

कोलकाता – वृहतर कोलकता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत 14.11.2017 मंगलवार को बाल दिवस समारोह मनाया गया। हावड़ा अंचल द्वारा माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा रामकृष्ण संघ हावड़ा में बच्चों को नाश्ता, कॉपी, पेन, पेंसिल वितरण किये गये व बच्चों को गेम भी खिलाये गये।

मध्य कोलकता अंचल द्वारा दमदम पार्क बस्ती में बच्चों को बिस्कुट, टॉफी, केक, पार्क फूड का पैकेट वितरण किये गये। पूर्वी कोलकता अंचल द्वारा 400 हॉरलिक्स पाउच, 450 बिस्कुट व चॉकलेट पैकेट बच्चों में वितरण किये गये। हिंद मोटर अंचल द्वारा अंधा विद्यालय मखाला उत्तरपारा में 2 पंखा, 5 ट्यूब लाइट दान की गई। सांभर बड़ा, इडली, कोल्ड ड्रिंक, केक, सेब, टॉफी 80 बच्चों में वितरण किये गये तथा उनके साथ अंताक्षरी खेली गई। सभी अंचलों की बहनों का सहयोग सराहनीय रहा।

नागौर – नागौर जिला माहेश्वरी संगठन द्वारा बाल दिवस मनाया गया। कुचामन में संगठन द्वारा स्कूल में प्रतियोगिता एवं खेलकूद करवाया गया। सभी को वहां की स्थानीय महिलाओं द्वारा पारितोषिक एवं टॉफियों का वितरण किया गया। जिला सचिव कृष्णा जी मंत्री का स्कूल में स्वागत माला की बजाय श्री फल से किया गया। यह हमारे संगठन की नई पहल है। मकराना संगठन द्वारा क्विज प्रतियोगिता एवं तिल्ली से महेश बाल निकेतन लिखवाकर वन मिनट शो करवाया गया। विजेताओं को संगठन द्वारा पुरूस्कृत किया गया।

नितिन जी गडकरी ने उपस्थित रहकर मंडल के कार्यक्रम की सराहना कर तहसील सचिव सुनीता चांडक को उनके कार्यो को देख उन्हे पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया।

डेगाना – श्रीमती उषा झंवर ने बताया कि डेगाना में भी संगठन द्वारा स्थानीय महिला मंडल के साथ मिलकर बच्चों के स्कूल में कविता की प्रतियोगिता कराई गई जो कि चाचा नेहरू पर था एवं जीके क्विज के प्रश्न पूछे गए। सभी विजेताओं को महिला मंडल द्वारा पुरूस्कृत किया गया। नावा में भी संगठन द्वारा स्थानीय महिला मंडल के साथ मिलकर प्रश्नोत्तरी, म्यूजिकल चेयर एवं कविता प्रतियोगिता कराई गई जिसमें विजेताओं को हमारे संगठन द्वारा पुरूस्कृत किया गया।

मालपुरा – माहेश्वरी महिला मंडल मालपुरा द्वारा स्टार किड्स पब्लिक स्कूल मालपुरा में आयोजित मेले में विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं चेयर रेस 200 मीटर रेस सरप्राइस गेम कराये गए और सभी विजेताओं को पुरूस्कार दिया गया। इस अवसर पर सभी स्टॉल प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। मेले में पधारने वाले अभिभावकों की भी प्रतियोगिताएं करायी गयी जिसमें श्रीमती अंजू जैन प्रथम और संगीता जैन द्वितीय रहीं। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्ष मनीषा बागला, कुसुम झंवर, सुमन आगीवाल, रीना बिरला, सुनीता काहलिया, ललिता हेडा, रेखा परतानी, उमा झंवर, चंचल झंवर और अन्य सदस्या उपस्थित थीं।

सेंट पॉल स्कूल, ब्यावर द्वारा मेवाड़ी गेट, चेतक सर्कल पर स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा सफाई अभियान चलाया गया एवं स्वच्छ भारत के अभियान में ब्यावर की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। इस हेतु ब्यावर की जनता को एक लघु नाटिका द्वारा संदेश दिया गया। जिसमें गंदगी से पनपने वाली बीमारियों के बारे में बताया गया। इस मौके पर सभापति बबीता चौहान, नरेन्द्र चौहान, ईश्वर तंवर, एवं सेंट पॉल स्कूल के फादर, टीचर, स्टाफ और बच्चे और अनेक वार्डवासी उपस्थित थे। इस अवसर पर एक वॉल पेंटिग का भी आयोजन किया गया।

अजमेर – श्रीमती गुंजन मोदानी ने बताया कि अजमेर जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा बाल दिवस को बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। ज्यादातर बहनों का मानना यह है कि एक ही दिन को बाल दिवस के रूप में न मनाकर जरूरत मंद बच्चों को पूरे साल छोटी छोटी खुशियां देकर उनके चेहरों पर मुस्कान लाना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। अजमेर में रहने वाली बहुमुखी प्रतिभा की धनी अम्बिका जी हेड़ा ने 4 महीने पहले 11 माहेश्वरी बहनों के साथ ''फ्लाइंग वर्ड'' ग्रुप बनाया। इस ग्रुप ने बहुत ही अल्प समय में बच्चों के लिए कई रचनात्मक कार्य किये हैं। अगस्त माह में बाधिर विद्यालय के बच्चों के साथ स्पोर्टस डे मनाया गया जिसमें बाधिर बच्चों को इशारों से पार्सल गेम, चूज योर स्टेशन तथा वलून गेम खिलाए गए। विजेता बच्चों को पुरूस्कार देकर सभी ने उनके साथ भोजन का आंनद लिया।

20 सिंतबर को शुभदा स्कूल के बच्चों के साथ पिकनिक का आयोजन किया। इन खास बच्चों के लिये सेल्फ बूथ और बहुत सारी गेंदों में से एक ही रंग की गेंद निकालना आदि गेम खिलाए गए। बच्चों को अपने हाथों से खाना खिलाकर उन्हे चॉकलेट और गिफ्ट दिए गए।

नवंबर माह में झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों के

बाल दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में हँसते मुस्कुराते बच्चे

लिए सपनों को स्कूल किराये पर लिया गया। इसके तहत चार दिन की गतिविधियां रखी गई। पहले दिन बच्चों को कपड़े, जूते व पानी की बोतल बांटी गई। दूसरे दिन भवन में बच्चों की जरूरत और शैक्षिक सामग्री सजाई दी गई। तीसरे दिन इस स्कूल का उद्घाटन श्रीमती शशि जी हेड़ा (पत्नि शिवशंकर जी हेड़ा, राज्य मंत्री दर्जा अजमेर विकास प्राधिकरण) के द्वारा किया गया। इस स्कूल को एक साल के लिये गोद लिया गया है और संस्था के 65 सदस्यों द्वारा पूरे साल भोजन भेजना तय किया गया है। बच्चों के आधार कार्ड बनवाने के लिए जरूरी कार्यवाही की गई। इस ग्रुप की संस्थापक अम्बिका जी हेड़ा हैं। इस संस्था के कार्यों को देखकर इसमें अब अग्रवाल, पंजाबी, खण्डेलवाल, जैन, सिंधी आदि समाज की बहनें भी जुड़ रही है। माहेश्वरी सखी मंडल, रामनगर की बहनों ने भी स्कूल में बच्चों के साथ बाल दिवस मनाया। बच्चों के साथ बच्चे बन उनके साथ मस्ती में खो गए। बच्चों को गेम्स खिलाये, खाने की बहुत तरह की स्टॉल लगाई। बच्चों के साथ डांस करके विजेता बच्चों को पुरूस्कार दिए गए। इसमें सखी मंडल अध्यक्ष उमा कांकाणी, उपाध्यक्ष राजकुमारी मंत्री के अलावा अल्का मूंदड़ा, अनामिका लाखोटिया, पूजा राठी, कृष्णा नुवाल, जया ईनाणी, भावना मूंदड़ा आदि उपस्थित थीं।

कोटा – अध्यक्ष श्रीमती संतोष तोषनीवाल ने बताया कि पूर्वी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत 14.11.2017 मंगलवार को बाल दिवस समारोह मनाया गया। कोटा जिला माहेश्वरी महिला संगठन के द्वारा श्री महेश बाल विद्या निकेतन में पोयम एंड ड्राइंग कॉम्पटीशन करवाया गया। कोटा महिला मंडल द्वारा रोड़ नं. 7 पर बालवाड़ी स्कूल मजदूर श्रेणी के बच्चों के साथ संस्कार संबंधित ज्ञान की बातें व गेम्स आयोजित किए गए, साथ ही भोजन सामग्री व गिफ्ट 100 बच्चों को दी गई। नवोदिता मंडल द्वारा गुमानपुरा स्थित सेंटर सोल्जर स्कूल में बाल मेला लगाया गया व गेम्स खिलाए गए। विजेताओं को पुस्स्कार वितरित किए गए। बूंदी जिला माहेश्वरी महिला संगठन के द्वारा बच्चों के साथ प्रश्न मंच का कार्यक्रम किया गया। हिंडोली कस्बे में बाल मेला लगाया व खेलकूद प्रतियोगिता कराई गई। प्रदेश में सभी बहनों का सहयोग सराहनीय रहा।

दुर्गापुर – दुर्गापुर शाखा ने बाल दिवस के अवसर पर मारवाड़ी शाखा के साथ मिलकर प्रदेश अध्यक्ष नीलम भट्टड की उपस्थिति में सुगंधा, सौष्ठा एवं सुषमा समिति के तहत सरकारी स्कूल के 150 बच्चों को इडली, बिस्कुट, कैडवरी दी। बच्चों को गेम खिलाकर प्राइज दिया गया। पर्यावरण सुरक्षा हेतु खाने में डिस्पोजेबल की जगह स्टील की थाली काम में ली गई।

अमरावती – विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन एवं गीता परिवार की ओर से गीता पठन में पारंगत बच्चों का सत्कार किया गया। गीता परिवार अंबापेठ शाखा अमरावती की ओर से हर वर्ष 4 साल से 15 साल तक के बच्चों को गीता का एक अध्याय पठन करके कंठस्थ कराया जाता है। श्रीमती शेवंती मूंदड़ा द्वारा गत 11 वर्षों से यह परंपरा चालू है। चिन्मय मिशन द्वारा होने वाली स्पर्धा में बच्चों को भेजा जाता है। इस साल सत्रहवां अध्याय कंठस्थ कराया गया। संपूर्ण जिले से 650 बच्चों को वहां पर प्रथम द्वितीय पुरूस्कारों से नवाजा गया। आजकल सभी पैरेंन्टस अपने बच्चों को कई तरह की क्लासेस भेजते है। मगर गीता का अध्ययन एवं कंठस्थ करने बच्चों की स्मरणशक्ति बढ़ती है और वे हमारी संस्कृति एवं आध्यात्म से जुड़ते है। गीता परिवार की ओर से श्रीमती करवा को भी सम्मानचिन्ह देकर सत्कार किया गया। अपने मार्गदर्शक उद्बोधन में विदर्भ अध्याय ने गीता इस महान ग्रंथ एवं देव भाषा

भव्या खंडेलवाल, ड गुट में कु. देविक्षा मूंदड़ा ने पुरूस्कार प्राप्त किये। सभी बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए सभी को पुरूस्कृत किया गया, गौरल राठी, अधर्व राठी, भूमि खंडेलवाल, साक्षी मूंदड़ा, वंश राठी, दीक्षा जाजू, दिव्या खंडेलवाल, आदित्य मूंदड़ा, मंथन जाजू उपस्थित थे। गीता जयंती के उपलक्ष्य में तारीख 30 नंबवर को राधाकृष्ण मंदिर में संपूर्ण गीता का पठन और प्रश्नावली का आयोजन किया गया है।

पूर्वी मध्यप्रदेश – पूर्वी मध्यप्रदेश में विभिन्न स्थानों पर बाल दिवस मनाया गया। हरदा में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, शिवपुरी में भाषण प्रतियोगिता, गुना में शारीरिक व मानसिक रूप से अक्षम बच्चों के साथ बाल दिवस मनाया गया, जिसमें संस्कृत के महत्व को प्रतिपादित करते हुए गीता का जीवन के हर क्षेत्र में विजयी करेन के लिए मार्गदर्शन का कार्य भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविंद किस तरह करता है इस अपने विचार रखे, तथा विदर्भ माहेश्वरी संगठन संस्कृति संवर्धन को सदैव प्राथमिकता देता है। गाता व्यक्तित्व विकास की कार्यशाला है। विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से सभी बच्चों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। इस समय विदर्भ महिला संगठन की अध्यक्षा सौ. उषाजी कारवा, प्रचारमंत्री सौ. शशि मूंदड़ा अमरावती, जिला सचिव सौ. रेणु केला, गीता परिवार अमरावती अध्यक्षा सौ. उर्मिला कलंत्री, शेवंती मूंदड़ा, कल्पना मूंदड़ा, शारदा मालाणी, गोमती राठी, गीता मूंदड़ा, सौ. टावरी उपस्थित थे। सभी मान्यवरों के हाथों से बच्चों को मोमेंटो प्रदान किये गए। इस वर्ष अ गुट में कु. प्रियांशू छांगाणी प्रथम तथा ब गुट में कु. शशीता टव्याणी, क गुट में

मनोरंजक खेल के साथ सांप–सीढ़ी, लूडो, शतरंज, बेडमिंटन, बेट–बॉल आदि उपहार दिए गये। बाल दिवस पर हरदा में संस्कृत के श्लोक प्रतियोगिता करवाई गई। वनखेड़ी में अनीता जी, शिखा एवं सुचिता ने केक काटकर बच्चों के साथ समय बिताया। रायसेन में भी बालदिवस पर बच्चों के लिए दीया बनाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई एवं गोल्डन सिटी पिकनिक के लिये लेकर गये। इसके अलावा पूरे प्रदेश में कई स्थानों बच्चों के लिये संस्कार शिविर लगाये गए।

श्रीमती प्रतिभा झंवर
अध्यक्ष

वृहत्तर ग्वालियर
माहेश्वरी महिला मण्डल

वृहत्तर ग्वालियर माहेश्वरी महिला मण्डल की नई कार्यकारिणी का ''शपथ ग्रहण समारोह'' दिनांक 12 अगस्त 2017 को सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीमती मंजू जी बांगड़ थी जिन्होंने बहुत ही अनूठे ढंग से अध्यक्ष डॉ. श्रीमती सुनीता नागोरी, सचिव श्रीमती निधि माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष श्रीमती तनु माहेश्वरी एवं समस्त नई कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। तदोपरांत नई कार्यकारिणी द्वारा गरीब व अनाथ बच्चों का एक आवासगृह गोद लिया, जिसका आरम्भ बच्चों के लिए ग्यारह डोरमेट्री पतंगों को दान में देकर किया गया। दिनांक 8 अक्टूबर 2017 को सामूहिक ''करवाचौथ उद्यापन'' का सफल आयोजन किया गया। दिनांक 24 दिसम्बर 2017 को ''आनन्द मेला'' का भव्य आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत उन बहनों को स्टॉल्स लगाने के लिए प्रेरित किया गया जो अपने घरों से कारोबार करती हैं, ताकि समाज में उन्हें उनकी पहचान मिल सके। इसमें 50 से भी अधिक बहनों द्वारा विभिन्न उत्पादों के, व्यंजनों के तथा मनोरंजन खेलों के स्टॉल्स लगाये गये। ''आनन्द मेला'' में शहर के प्रतिष्ठित परिवारों से हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिया तथा मेला में आयोजित ''मेगा लकी ड्रॉ'' का लुफ्त उठाया तथा मेले की बहुत सराहना की।

प्रथम पूज्य गणपति जी की प्रार्थना व झांकी से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। विभिन्न मुद्राओं के रंग बिरंगे परिधान में स्वागत गान हुआ। मंच पर देवकिशन जी मूंदड़ा, साधक जी पाण्डे, विश्म्भर जी नेवर, नन्दू जी लाखोटिया, भंवर जी राठी, पवन जी राठी, कल्पना जी गगरानी, शोभा जी सादानी, इंद्रा जी गांधी, आशा जी माहेश्वरी, कौशल्या जी गट्टानी,

मंजू जी बांगड, पूर्वांचल उपाध्यक्ष सरला जी काबरा, सहमंत्री मंजू जी कोठारी, कलकत्ता प्रदेश अध्यक्ष निर्मला जी मल्ल व सचिव सीमा जी भट्टड़ थीं। सभी ने आर्शीवाद स्वरूप उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। साधक जी पाण्डेय ने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं माहेश्वरी सभी के कार्यक्रम उर्जिता में शामिल हुआ। बनारस में भी देव दीपावली देखने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि महिलाएं सभी कार्य निपुणता से करती है। कल्पना जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि कलकत्ता टीम में नवदुर्गा का स्वरूप देखने को मिला हर महिला में नवशक्ति का नवरूप देखा। 35 युवा सदस्यों को इस बार की कार्यकारिणी में सदस्यता दी गई क्योंकि नई ऊर्जा, नई सोच इनके पास देखने को मिलता है। तीन पीढी ने मिलकर इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। 150 स्थल एवं 21 प्रदेशों ने अपनी संस्कृति के अनुसार स्टॉल लगाए।

न्यू एण्ड ओल्ड जनरेशन रिलेशनशिप को समझे

माता-पिता, पति-पत्नी, सास-बहू, भाई-बहन सभी रिश्तों में मिठास के बजाय खटास बढ़ रही है यह भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिये ठीक नहीं है हमारी आने वाली पीढ़ी हमसे कुछ सीखे और प्रेरणा ले और वे अपनी पीढ़ी को भी ऐसा संदेश दे कि जिससे समाज ना केवल रिश्तों में बल्कि हर क्षेत्र में सफलता अर्जित कर सके।

माहेश्वरी समाज द्वारा टॉक शो एवं ओपन डिस्कशन कार्यक्रम का आयोजन किया माहेश्वरी लॉन में किया गया जिसमें बड़ी संख्या में समाज के महिला पुरूष तथा युवा वर्ग शामिल हुआ। कार्यक्रम कि मुख्यातिथि अशोक बंग नासिक तथा विनीता बियाणी शामिल हुई जिन्होंने बढ़ते तनाव, कैसे हो बचाव, पारस्परिक व्यवहार जिसमें हो सिर्फ प्यार, रिश्ते वही सोच नई जैसे विषयों पर लगातार सवाल जवाब किये गये। समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सभी ने सराहना की।

कार्यक्रम में समाज के सभी आयु वर्ग के लोग शामिल हुए और अपने जिज्ञासाओं से ओतप्रोत सवालों के जवाब भी प्राप्त किये। अतिथि द्वारा बहुत ही शालीनता और सजगता के साथ सभी सवालों के जवाब दिये गये और न्यू तथा ओल्ड जनरेशन में आ रहे गेप को भी बताया। अतिथियों ने कहा कि हम अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को शुरू से ही बच्चों को अवगत करायें, उन पर अपनी मर्जी न थोपें। बच्चों को भी चाहिए कि वे अपने माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों की बातों का सम्मान करें।